श्री हरिहर चौधरी

जन्म तारीख : 26-02-1952

इन्सान (कहानी संग्रह)

अन्य प्रकाशित पुस्तकें

- अकेला पंछी (उपन्यास)
- गण नायक (ओड़िआ उपन्यास)
- ए जीवन एक नई (ओड़िया कविता)
- मणिष (ओड़िआ कहानी संग्रह)
- मरूधूमि र राजकुमार (ओड़िआ एकांकी संग्रह)
- नर पक्षी (ओड़िआ कविता संग्रह)
- प्रेरणार ज्वाला (ओड़िआ कहानी)
- दाऊ वुमेन माई मदर (अंग्रेजी कविता संग्रह)
- पक्षीराज घोड़ा र सिंह (ओड़िया कहानी)
- प्रकाश प्रतीक्षा में
- बेताल (हिन्दी /अंग्रेज़ी उपन्यास)
- यह कैसा मन! (हिन्दी कविता)
- कलम की वार्ता : समाजिकता व मानसिकता प्रतिष्ठा

इंसान

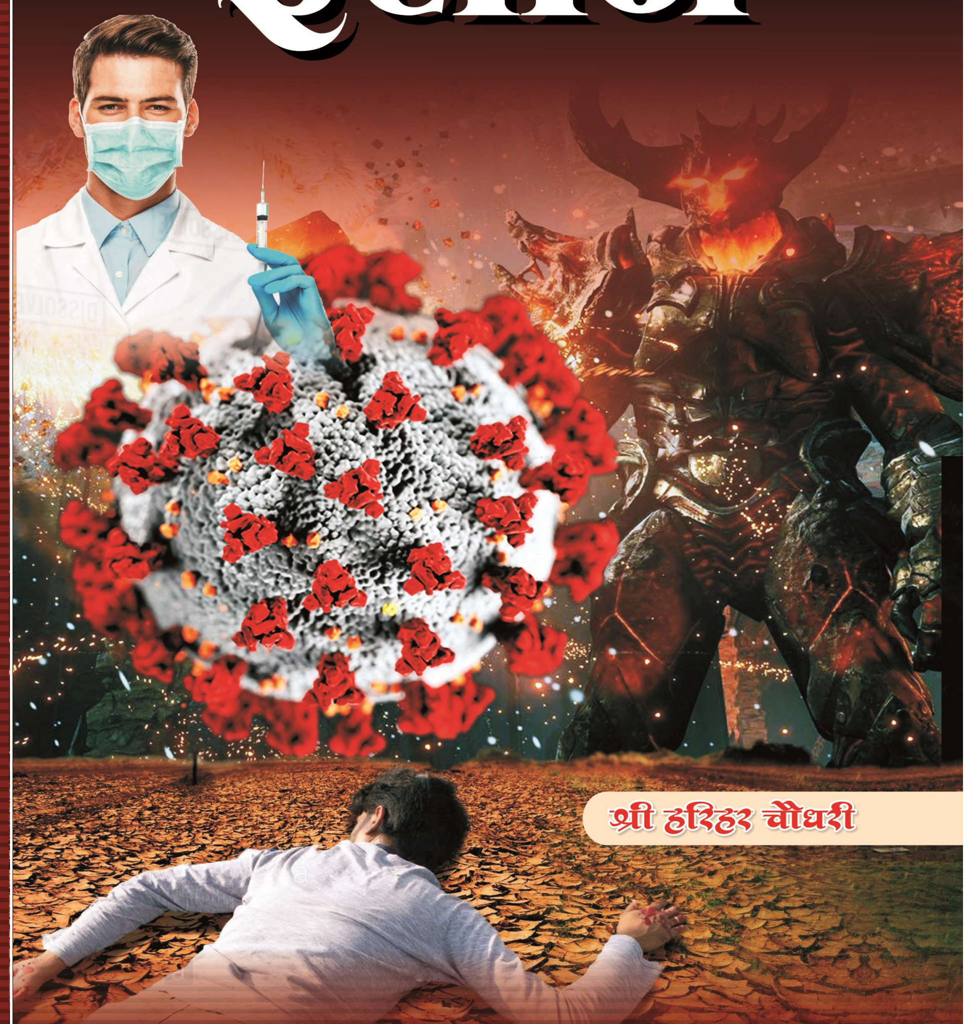

श्री हरिहर चौधरी

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

इन्सान

(कहानी संग्रह)

लेखकः

श्री हरिहर चौधरी

प्रकाशकः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद

इन्सान (कहानी संग्रह)

अहिंदी भाषी हिंदी लेखक व सर्वस्वत्व संरक्षकः-
श्री हरिहर चौधरी, पिताः लोकनाथ, माताः पार्वती देवी,
एम.ए.ओड़िआ, हिन्दी, शिक्षा
सेवानिवृत्त प्रधान शिक्षक,
प्रकृति बंधु,
पार्वती साहित्य सदन,
लोकनाथ मार्ग, हिंजिलि काटु,
गंजाम, ओडिशा, पिन-761102
भ्राम्य भाषः 09778094973

वीहिसास पुस.   33–2020/01
प्रथम संस्करण : 2020

© कॉपीराइट : लेखक

मूल्य : रु० 100/-(एक सौ रूपये मात्र)

प्रकाशक : विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, कानाफूसीः 9335155949
ई–मेल : sahityaseva@rediffmail.com

मुद्रक : एकेडेमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

विशेष : प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का दायित्व और अधिकार लेखक का ही होगा. प्रकाशित रचनाओं से प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही है. सभी प्रकार के विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज, उत्तर प्रदेश होगा।

टंकण : एम.टेक. कम्प्यूटर्स, प्रयागराज, उ.प्र.

सूची पत्र

क्र.सं.	कहानी	पृष्ठ
1	इन्सान	06
2	सिनी भरत	08
3	बाढ़ की पाबंदी	11
4	ढाई अक्षर	14
5	श्रद्धांजलि	17
6	मुखौटा का प्यार	21
7	स्वर्ग नर्क	23
8	गर्दन	26
9	फैक्टरी बसेगी	30
10	मुक्ति	32
11	हिजड़ा	37
12	आशीर्वाणी	40
13	मरघट की मिट्टी	43
14	ज्वाला	47
15	वनवासी	52
16	विश्व वतन	57
17	देवदूत	63

सूचनिका

जब इन्सान अपनी भूल चुक पर अनदेखा करता है तब उसके कारनामें में कालिख लग जाती है. वह अमन चैन खो बैठता है. सिर्फ जीवन जंजाल में जकड़ जाता है. फिर भी कोमल रिस्ते नातों को तोड़ मरोड़ कर आगे बड़ी रफ्तार से आनन फानन में दौड़ना ही चाहता है. चाहे एकाएक अड़चनें क्यों उसे झकझोर न दें. लेकिन मंजिल ही उसे इशारा करती है कि ए मनुष्य, तू जलिद मेरे पास आ जा, लाख मुसीबतें तुझे कुछ कर नहीं सकती. बीचोंबीच आदमी धोखा पा जाता है. उलंघन की चरम सीमा पर बेदम हो जाता है इन्सान. इल्म उसे धीक्कारता है. संवेदनहीनता उसे कोसता है कि इतनी भूल अगर सुधर जाती तो कामयाबी सहज सुलभ हो जाती.

इस विचार पर यह सत्रह कथा साहित्य संकलन 'इन्सान' की सूचनिका लिखी जाती है कि मूल्यबोध का नुकसान मत करना, अनमोल जीवन को मत गंवाना : अमानवीय कार्यवाही ताकतवर को भी एक दिन नष्ट भ्रष्ट कर देता है. हमारा आप्त वाक्य कहता है कि नष्टस्य कान्या गतिः? यानी जो नष्ट हो गया है उसकी गति सिर्फ अपने आपको मिटा देने में सनकी हो जाता है. अवश्य जो सतर्क हो जाता है, भूल चूक संवार कर सही सलामत सुधर जाता है. वह दुनियाा में अपना सफेद ध्वजा फहरा सकता है वरना खल प्रकृति के लोग इस धरती से विलुप्त हो जाते है.

इस तथ्य पर आधारित दृष्कृतकारी शैतान 'इन्सान' के दरबार में चरम दण्ड पाता है. 'सिननी भरत' दोनों अपने राष्ट्र तथा विश्व की भलाई के लिए प्यार और इन्सानियत के खातिर एक सृजनशील समझौता कर लेते है 'बाढ़ की पाबंदी' में कवि प्रतिकूल सांसारिकता में भी डगमगा नहीं सकता. 'ढाई अक्षर प्यार' की सुरक्षा ही सब प्रकार की समस्याओं का सहज समाधान कर डालता है. शहीदों के प्रति 'श्रद्धांजलि' ही सही राष्ट्रभक्ति है जो कि शैतानों से इन्सानों की रक्षा करने कुर्बान हो जाते है.

'मुखौटा का प्यार' एक साजिश के तहत इन्सान के ऊपर एक आक्रमण है जो कि आखिर हार ही जाता है. परिवार में नर्क मय वातावरण को लायक औलादें ही पूजनीय गुरुजनों के निर्देशन में स्वर्ग भी बना सकते है. 'स्वर्ग-नर्क' बेटियों की गर्दन रेत कर इन्सानियत पर कालिख मत लगाओ. आजकल के कृतघ्न इन्सान. आजकल कुदरत को कुचल कर फैक्टरी मत बसाओ इन्सान! हर मुसीबत को दिलों दिमाग में झेलने से ही 'मुक्ति' मिल सकती है. जो नीच दुष्कर्म करता है वह नकली 'हिजड़ा' बन कर कुछ ही अच्छा नहीं कर सकता है. इस दुनिया में संतान ही मां के लिए ईश्वर की 'आशीर्वाणी' बन जाती है. 'मरघट की मिट्टी' से हमें बहुत कुछ सीख मिलती है कि इन्सान सही रास्ते पर जाकर ठीक मंजिल पा सकता है. जीवन की 'ज्वाला' को शांत करना ही सही जीवन यापन है. 'बनवासी' ही विशुद्ध जीवन की मर्मगाथा के मर्मज्ञ हैं.

हर युग में जब कोई विध्वंसक शक्ति उथल पुथल मचाता है, उसे जब्त करने 'विश्ववतन' पालन हार उभर आता है. इसी तरह संप्रति महामारी कोविड़-19 करोना भूताणु का तुरत विनाश के लिए विशिष्ट वैज्ञानिक प्रतिभा फौरन रोग प्रतिरोधक टीका उद्भावन करेगी. पृथ्वी पंचायत भी साम्य नीति पर पुनः संगठित होगा. उदण्ड देशों पर लगाम लगाएगा. किसी को विशेषाधिकार यानी 'विटो पावर' नहीं देगा. हर मुसीबतों का सम्मिलित सही समाधान होगा. जन जगत को अकाल मृत्यु लोक से जरुर उद्धार करेगा. अतः

'सच्चा इन्सान ही 'देवदूत' की नाई,
'हरि' मिटाए तकलीफ और करेगा भलाई!'

आखिर, इस कथा साहित्य संकलन 'इन्सान' के प्रकाशन के लिए विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज तथा इसके सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी और सहृदय पाठक पाठिकाओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ.' जय हिन्द, जय हिन्दी

श्री हरिहर चौधरी
विनीत लेखक

इन्सान

मैं शैतानों का सरदार हूँ. सुधर्मा सभा को अख़्तियार कर लूंगा. इसे अधर्मी सभा बना के रख दूंगा. जबरन वज्रबाण इन्द्र से छीन लूंगा. अपनी प्रजा को मचल कुचल कर देवताओं के खिलाफ लड़ने को मजबूर कर दूंगा. महाबली राक्षस मेरे गुरू है और कई उन्मादक बोलकर दोस्तों के जरिए तलवार, मशीनगन, ड्रोन तथा परमाणु बम से चारों ओर कोहराम मचा दूंगा. यहीं मेरी करतूत है, सावधान..

शैतानों से तितर-बितर हो कर लोग बाल बच्चों की हिफाजत के लिए जहां-तहां शरण लेकर छुप गए. ऐन वक्त देवलोक का एक बलीहारी बुजुर्ग इन्सान जो दुनियां के लिए समर्पित एक फकीर बाबा बन गए थे निकल पड़े, वहीं दहशत को किसी भी तरह बुझाने के लिए.

शैतान सद्वरि ने इन्हें देखा, एक बावरा, पागल, बंजारा इन्सान, कुछ भी बोल नहीं सकता. सुनाई भी ज्यादा नहीं कम देता है, ऑख की रोशनी धीमी हो चुकी है. अपने सिपाहियों से आदेश दिया इसे खत्म कर दो यह हो सकता दूसरे मुल्क की कोई छिपकली, खटमल...... अधमरा हो गया बेचारा नंगा, निर्विकार, पागल. ना रुदन ना हंसी. जब उसने देखा एक शैतान सिपाही के पैर के घाव से खून निकल रहा है तो अपना कपड़ा फाड़ कर बांधने लग गया. सबके चले जाने पर उसने पानी की एक बोतल और दो रोटियां सौंप दी. फिर आने की तसल्ली देकर चल पड़ा.

पहाड़ी झनी का किनारा निशार्द्ध, झिंकरी, निशाचर प्राणियों की आहटों को फाड़कर एक छोटी सी गाड़ी से उतरे तीन आसुरिक लोग, निकले साथ एक जन अधेड़ उम्र की औरत और उसके बगल में एक नींदक्कड़ नादान बच्चा. उसे छीनकर पास की झाड़ियों में फेंक दिया गया. औरत के साथ बूरे बर्ताव के लिए जब छेड़छाड़ करने लगे तो

फकीर बाबा जाग्रत हो गए. इतने में मशाल जलाकर शैतान सद्वरि अपने पलटनों के साथ आते देखकर तीनों आनन-फानन में गाड़ी से फरार हो गए. सद्वरि भी उनका पीछा करने लगा.

इधर मां और बच्चे का उद्धार करके फकीर बाबा नजदीक एक गांव में जाकर गधों के मालिक से मरीजों की हालात सुधारने हेतु पर्याप्त दूध मंगाकर पिला दिए. सबेरा हो चुका था. अत्याचारियों को निपात करके सद्वरि और साथी लौट आए थे. अपनी बीबी और बच्चे के साथ इस अलग किस्म के इन्सान को फिर देख कर उसे खत्म कर देने का हुक्म दे दिया. लेकिन एहसानमंद औरत ज्यों ही मना कर रही थी उसके पहले ही फौंरन एक सिपाही ने गोली मार दिया. बुजुर्ग के मुंह से आखिर निकल रहा था ओरे शैतान, आखिर बन जा तू इन्सान, कुछ दिनों का मेहमान, छोड़ दे गर्जन.

मां और बेटे समेत सरदार भी बाबा के लिए आखिर बिलख रहे थे.

सिनी भरत

सिनी और भरत दोनों चीन हंक विश्वविद्यालय के एक ही परिसर में रहकर स्नातकोत्तर पढ़ाई कर रहे हैं. भरत चीन की भाषा और साहित्य में तथा सिनी हिन्दी भाषा और साहित्य में गहरी दिलचस्पी रखते हैं. उन दोनों के पाठ्यक्रम में दो घण्टे की अवधि के लिए मंच पर संयुक्त अध्ययन की भाषा में भाषण यानी मौखिक अभिव्यक्ति अभ्यास का कार्यक्रम निश्चित है जहां चीनी और हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों की मौजूदगी अनिवार्य है. ऐसे माहौल में अभ्यस्त होकर दोनों की एक दिन आकस्मिक जमघट हो गयी. आपसी शुभ-कामनाओं का आदान-प्रदान में करीबीपन उभर आयी. जीवन साथी चुनने में दोनों का एक सााथ एक दूसरे के प्रति आग्रह और भी सारे विश्वविद्यालय में अनुकूलता प्रस्तुत हो गयी. दोनों ठंडे दिमाग और दिल दरियावी से बातचीत करने लगे.

भरत : 'मेरी प्यारी सिनी, तुम खूब सुंदरी स्वास्थ्यवती और बुद्धिमती भी हो और अखण्ड देशप्रेमी भी. लेकिन यह एक बात जरूर याद रखोगी कि हमारा प्यार का रास्ता सीधा नहीं है. लोग टेढ़ा-मेढ़ा देख सकते है. यह कंटीला भी हो सकता है.

सिनीः तो हम फौरन फूलों की बरसात करवा देंगे ताकी आसानी से हम दोनों बवंडर की इन्सानियत और इल्म के जरिए उसे सामना करते हुए पार कर जाऐंगें. किसी आश्रय स्थल पर. वहां एक छोटा सा रैन बसेरा बना लेगें.

भरत : इस पक्के वादे को निभाया जा सकेगा न?

सिनीः बेशक, जरूर निभा सकेंगे हम.

भरतः हमारे प्राचीन उज्जैन के सम्राट विक्रमादित्य का कभी तुम्हारे चीन की सुंदरी राजकुमारी के साथ विवाह हुआ था. आज भी यह दंत कथा

युगों युगों से, पीढ़ी दर पीढ़ी होकर तरोताजा है. वे महापुरुष महारथी राज कन्या दोनों हमारे आदर्श है. इनके अलावा चीन के परिव्राजक फा-हि-यान तीर्थाटन और अध्ययन के लिये भारत वर्ष आए थे फिर कन्नौज के सम्राट हर्षवर्द्धन के समय ह्वेनसांग भी यहां आए थे. इनका ऐतिहासिक विवरण इसका साक्ष्य है.

सिनीः हमें दोनों देशों को मिलाकर एशिया महादेश और विश्व को रोशन करना चाहिए.

भरतः लेकिन दुश्मनी को दुश्मनी से मिटाई नहीं जा सकती बरन दोस्ती से ही यह सब कुछ संभव है. इसीलिए तुम्हारे देश को हमारे देश ममें खूंखार आतंकवाद नहीं फैलाना चाहिए.

सिनीः इसलिये हमारे बीच भाईचारा कायम रखने के लिए एक मौका चाहिए. हमें विभिन्न विकल्प ढूंढने होंगे इसी से दोनों देश की बिगड़ती हुई हालात सुधर जायेगी. आप से हमारी एक विनती यह है कि आपके देश की नियामक संस्थान में एक 'चीनी' संपर्क विभाग फौरन खुलवा दिया जाए. इसके एक विशेष मन्त्रालय सचिव स्तरीय कार्यालय, कार्य निर्वाही मान्यवर एक मन्त्री जी की नियुक्ति होनी चाहिए. इस मंत्रालय के सदस्य होंगे देश के चीनी विषय के जानकार, लेखक, सांवादिक आादि. इसके लिए एक विशेष प्रकल्प होना अत्यंत आवश्यक है. फिर आप देखेंगे कि कैसे भारत और चीन का संपर्क सुधर जाता है.

भरत : यहां तिब्बत समस्या भी है. साम्यवादी लााल चीन से पलायन कारी लोग भारत में शरण लिए थे. शांति और इन्सानियत की हिफाजत को चीन बुरा न मान ले. काली रात बीत गयी तो तकलीफ वाली बात भी मिट जानी चाहिए. नए सिरे से दोनों देशों को नया प्रयास करना चाहिए.

सिनीः कैसे भी दोनों राष्ट्र के लिए अहितकारी कार्यक्रम होने मत दीजिए.

भरतः किसी तीसरे दुष्ट लग्न भंगकारी को यहां मध्यमार्गी होने का अवसर मत दीजिए.

सिनीः हमारे दोनों देशों का इतिहास और पुराण इतना प्राचीनतम है कि तीसरा मामलातकार बहुत अर्वाचीन है जो हमारे रिश्ते के समय उसका जन्म भी नहीं हुआ था.

भरतः हां, उसने मां का दूध पीकर अपनी मां का बाजू ही छीन लिया था उस छिन्नांगी के पास रह कर दबा लेने के बजाय उस पर अट्टहास करता है. बाजीगरी दिखाता है. दूसरों की चापलुसी करके अपने दूध और खून का ही अपमान कर रहा है.

सिनीः उसका नाम बड़ा नहीं हो सकता, काम के ओछापन है. उसे बार-बार मौका दिया जाता है कि शांति पूर्ण सहावस्थान करो. भाईचारे का हाथ थाम लो. लेकिन वह हाथ झटककर तोड़ डालना चाहता है. खैर इसके बारे में बहुत कुछ सोचने का बीड़ा हमें उठाना चाहिए.

भरतः हम दोनों हाल फिलहाल ही दो देशों की एक सशक्त कड़ी है जिसे हम सब को डॉवाडोल नहीं कर सकती है.

सिनी जय सिनी और भरत की सगाई, जय भारत और चीन होगी भाई-भाई यहां तीसरे किसी की दलाली कतई नहीं चलेगी.

भरतः जय हो हमारे प्यार की दुहाई, जय सिनी और भारत के दो देशों की भलाई..........!

बाढ़ की पाबंदी

अभिलाष बाबू ने संसार बसाया है. दो बेटे और दो बेटियों है. सरकारी नौकर भी है. पत्नी उर्वशी खूब सुंदर है. अलहड़ जवानी देख कर दोनों पति-पत्नी बहुत खुश थे. सुख के बाद दुख भी आ ही जाता है. अभिलाष बाबू के परिवार की टूटन ने उन्हें झकझोर दिया. तीन भाई और चार भतीजों की आनाकानी दूर करने उनकी कोशिश नाकामयाब हो गयी. परिवार विभक्त हो गया. अभिलाष विचल गया. वह एक कवि था. कविता के सहारे उन दुःस्थितियों का सारस्वत चिंतन लिखा करता था. इसी बीच पहले बेटा और दूसरी औलाद बेटी अपनी पसंद के चहेते साथियों से गुप्त संपर्क रखने लगे. अभिलाष की अभिलाषा मचल गयी परिवार थिरकने लगा. सुन्दरी गृहस्थी की नादानी भी अहंकार में बदल गयी. स्वामी को उठक बैठक करवाना मुमकिन न हो पाया. दूध उबले तो चूल्हे कको और इन्सान उबले तो मरघट को की भांति उनका परिवार का विघटन होने लगा. बड़े बेटे को नौकरी में अभिलाष लगा दिया तो वह घर से अलग हो गया और अभिमान करने लगा कि जेबर आभूषण न देना तो बाप मां का घोर अन्याय हो गया है. इसीलिए तनख्वाह से एक कौड़ी भी आप अनचाहे आदमियों को नहीं दिया जाएगा. बस रिश्ता खत्म. ओह कैसी अपार शांति, दायित्व मुक्ति भगवान को शत धन्यवाद जो नौकरी वाली एक दुल्हन मुझे मिल गयी. सोच रहा था बड़ा छोकरा उन परिवार वालों की संकट से आसानी से छुटकारा दिला देगा. वाह रे रूपयों की ताकत जापानी नोट की तरह अर्थ की कीमत घटती जा रही है. इस महंगाई के युग में अच्छी तरह जिंदगी गुजारना मुश्किल होता जा रहा है. इसीलिए फालतू नातों को टाटा-टाटा, बाय-बाय, अलविदा. अब आई बड़ी बेटी की बारी वह छोटी- छोटी बातों पर अपनी नाराजगी जताती रहती. कभी कभार अपने

पेट अचानक दुखने से लगातार नाच नचाया करती थी. मानो किसी अपदेवी उसकी अंदरूनी शरीर में अखाड़ा मचा रही है. तमाम घर परिवार तो इसी से तंग रह जाते थे. बद किस्मत को कोसती रही थी पत्नी देवी. बेचारा अभिलाष कितने डॉक्टरों, माहिरों के पास जाकर इलाज करवाता था. इसी बीमारी की वजह से गृहकर्ता ही अभियुक्त बन जाता था, क्योंकि उसकी कविता लिखने से परिवार के प्रति उसकी लापरवाही मानी जाती थी. बीचों बीच वह चालाक लड़की भी पढ़ाई में अब्बल रखने से घर की शान बढ़ती थी. उसने आंख मिचौली खेली और एक असंभव प्रेम विवाह प्रस्ताव ने सारे परिवार को झकझोर दिया. बहुत कुंठित भाव से उसकी शादी भी मुमकिन हो गयी और एक नाती के एक साल की परवरिश होने के बाद उसकी यादों की ताकत बिल्कुल शून्य हो गयी. उसने राह पकड़ ली. आई फिर तीसरी औलाद की बारी वह चुप्पी खामोशी की अवतार थी. स्नातकोत्तर साहित्य उत्तीर्ण होने के बावजूद न जाने उसके मन में क्या था? अभिलाष को मालूम न हो सका. मां तो आसमान में तैर रही थी. गृहस्थ को अचंभा बना देती थी. तनिक भी परेशानी झेल नहीं पाती थी. मासिक ऋतु स्राव बिगड़ जाने की बीमारी भी उसे विकृत मानसिकता की ओर ले जा रही थी. अच्छा इलाज कराने के लिए अभिलाष ने कविता महारनी की रचना को भी जलांजलि दे दी. क्षुब्धा पत्नी की अच्छी तरह चिकित्सा अस्त्रोपचार करवाकर तंदुरूस्त बेहत्तर बनवा दी. मध्यावधि तनख्वाह से दस पंद्रह हजार मुद्रा भी दांव पर लगा कर उसने सफल आत्म संतोष प्राप्त किया था. फिर भी धर्म पत्नी गुर्राने लग रही थी कि दूसरी बेटी की शादी फौरन क्यों नहीं करवा रहे हो? उम्र पच्चीस साल लपक रही है. जो प्रस्ताव लाया गया दोनों मां बेटी उसके बाल से खाल ही निकालती रही थी. उनके मन का सुराग गृहकर्ता को तनीक भी नहीं जताया जाता था. एक बहुत आग्रही पक्ष से उनकी रजामंदी पर ही बंधन की नींव डाली गयी. पत्नी के भाई बिरादरी चुप्पी साधते रहते थे. इस परिवार से

उनका अच्छा दिलदार आर्थिक बर्ताव हो नही पा रहा था, इसीलिए वरपक्ष की कमजोरियों पर उनका पर्दाफाश भी नहीं हो सका. एक जन तो 'नरे वा गुजरे अश्वथाम हत' कहकर व्यग्य भी करने लगा मानों तुम कश्मकश झेलते रहो और हम लोग ऐन वक्त के बाद ही सही. दिखलाकर तालियां बजाते रहेंगे. शादी के बाद वही हुआ जो पत्नी के बिरादरी चाहते थे. पत्नी की तबियत बुरी तरह टूट गयी और बुढ्ढू बनकर बेटी पर तरस खाने लगी उस पर सारे घर परिवार की दौलत उड़ेल देने, रात-दिन एक करने लग गयी बेटी ने तो लुकछिप कर आनंद उठाने लगी और मौनावती बनकर ही अपने घर संभालने चल पड़ी. अब आ गयी चौथे की बारी. अभिलाष की अपनी एक लायक विद्यार्थिनी के साथ छोटे बेटे का ब्याह करवा दिया गया. इसी से सबके सब घबरा गए है. चूंकि इस की कहानी लंबी नहीं हो पाई तो बुढ्ढू नायक को सब भुक्त भोगने लगे. इसी से कविता की शुष्क धारा में फिर प्रबल ज्वार आने लगा! कथा कविता की बाढ़ को कलम की पाबंदी दिलाने की कोशिश हुई. अब आ गयी अभिलाष की आखरी बारी वह शांत स्थिर स्वाधीन चिंता नायक बन गया. कलम चलती रही है. जिंदगी जूझती रही है. तृप्ति मिलती रही है.

ढाई अक्षर

हमारे यहाँ के देहात से काम धंधे के लिए बेशुमार आदमी अपने प्यारे घर, द्वार, माँ-बाप, बाल बच्चों को छोड़कर वहां शहर की झोपड़ पट्टी में बस गए थे. देश के कारखानों को कामयाब करने लहूलहान हो गए थे. पर एक सौ तीस करोड़ वाले इस देश की यह देहाती रीढ़ को तुड़वाने एक छोटी सी जहरीली मक्खी की तरह एक आतंकवादी पड़ोस देश ने हीन प्रयास किया था. उसका नतीजा यह हुआ कि एक ही नियत वक्त पर शहर की भिन्न भिन्न जगहों में बम विस्फोट, आगजनी की घटनाओं में जान माल का नुकसान हुआ. घायलों में कोहराम मच गया. शेष आदमी ने आतंकित होकर भागदौड़ शुरु कर दी.

उसकी प्रतिक्रियाएं तो अखबार और दूरदर्शन में दृष्टि गोचर होने लगी. फिर भी एक सद्य विधवा औरत जो अपने वतन वापस आई थी, उसकी मार्मिक उक्ति इस प्रकार की थी.

हमारा पड़ाव जल रहा था. दुश्मन भी छापा मार रहे थे और हमारे बीचों बीच नफरत के बीज बोया करते थे. हमें दो गुटों में बांट देना चाहते थे. उनकी चाल भी रही. यद्यपि भिन्न भिन्न लोगों की अलग अलग चलन है, रीति रिवाज है, लड़ाई झगड़ा करने का यह कारण हो ही नहीं सकता. इन जजबात पर लात मारकर दो गुटों के चुने गए प्रधानों-सरदारों को गायब कर दिया गया जो कि हमारे रक्षा बंधन के

मुख्य सेतु थे. पुलिस भी नियत समय पर आ पहुंची लेकिन छानबीन के बाद उन सरदारों की लाशें ही जब्त हुई शव पोस्टमार्टम के लिए. मेरा भी कलेजा फटते नहीं फटा कि मेरे शौहर भी उन लाशों की श्रृंखला में एक कड़ी थे. हाय रे नफरत की आग, तू ने मुझे भी क्यों नहीं मार डाली....? बेवक्त अपना सोहाग सिन्दूर क्यों मिटा दिया तूने? पुलिस अपना फर्ज निभा कर और तसल्ली दिला कर चली गई.

फिर एक चीख सुनाई पड़ी. दो गुटों में तोड़फोड़ करके खूंखार आदमियों ने अपनी क्रूरता दिखाई. पुलिस गाड़ी की आवाज सुनाई पड़ी. राजमार्ग पर लोगों की भागदौड़, पुकार के बीच एक अनाथ बच्चे का राजमार्ग पर चित्कार सुनाई पड़ा. मैं भी चौंक उठी. देखने लगी कि सद्य जात एक शिशु.....! लेकिन उसकी माँ तो कहीं दिखाई नहीं पड़ती? गायब हो गई है क्या? न जाने उसके साथ कैसा बर्ताव हुआ! हाय रे वतन....! कुर्बानी की जमीन....! तू ने भी अपने दिल के टुकड़े को निछावर कर दिया? वह अपना सिर पिटने लगी. इतने में हल्ला गुल्ला मच गया. फिर दो गुटों में जहर घुल गया था. दो गुट के आदमी उस बच्चे के खून में अपना ही अक्स ढूंढ रहे थे. बच्चा रो रहा था...को अहं क्यों हूं...? इसका अर्थ ऐसा महसूस हुआ कि ए आदमी, मुझे भी तू क्यों अपनी गोद में शरण नहीं देता....? मैं कौन हूं? मैं निरा कंकड़ पत्थर, तिनके से भी क्या गया गूजरा हूं...? जरा प्यार से मुझे क्यों तू नहीं अपनाता? मुझे पाकर क्या तेरी तृषा मिट नहीं सकती? ले...ले लो, मुझको गले लगा लो....तेरे आंचल में मुझे छुपा लो...तेरे जिगर के अमृत से मेरी प्यास बुझा दो, कोई मां...!

इतने में दूर से एक फकीर बाबा का गाना खंजरी के साथ सुनाई पड़ रहा था::

'धन दौलत की दुनिया,
तू ने की बड़ाई,
ढाई अक्षर....प्यार अपनालो

न करो लड़ाई....!

और मुझ से सहा नहीं गया. मातृत्व की पुकार जाग उठी. दंगे में अपने मरे हुए बेटे की याद में पगली सी हो गयी! लावारिस बेटे को अपनी छाती में चिपका लिया. उसे अपना अमृत पिला दिया. लोगों की भीड़ से मुझ पर पत्थर की बौछारे हुई. नजदीक के किसी एक आश्रम के घंटी की आवाज को सुनकर उसकी ओर चल पड़ी. बच्चा तो आंख मूंद कर दूध पी रहा था, मानों यह मुझे कह रहा था, मां, तू डरो मत! क्योंकि तूने ततो ढाई अक्षर प्यार की पनाह मुझे दे दी है न.. ! इसीलिए तुम मेरे गुरुजन हो गए हो. तुम्हें कोई भी लघुजन मार नहीं सकते, तुम अजर हो, तुम इस मिट्टी की अमर आत्मा भी...!

इसी वक्त फकीर बाबा का गाना फिर दिल पर दस्तक देने लगा-

ढाई अक्षर प्यार अपना लो
न करो लड़ाई।।

श्रद्धांजलि

उत्तर भारत को सस्त्रीक तीर्थाटन में निकला था. अमृतसर 'बाघा' सीमांत में हमारे जवानों का परेड देखा. स्वदेश प्रीति की प्रकृष्ट नमूना देख कर दिल और दिमाग अमृत भावना में तरोवतर हो गए. उस के बाद माता श्री वैष्णो देवी, श्री बद्री विशाल धाम और श्री केदारनाथ जी के दर्शन के लिए निकल पड़े. हिमालय का भीमकान्त प्राकृतिक तुषारपात में देश रक्षको की कर्त्तव्य निष्ठा देख कर सुप्त आत्मा जाग्रत हो गया. सुना हमारे कितने प्रहरियों के ऊपर सुनसान रात में मोर्टर की मार हुई है. घुसपैठियों का अनुप्रवेश और उसके प्रतिरोध के लिए हमारी सेनाओं में से एक जन कर्त्तव्यरत शहीद हो गए. बहुत दुःख लगा. उसके बाद भी कई दिनों तक ऐसी दुखद घटनाओं की पुनरावृत्ति हुई. ऐसे क्यों लगातार हो रहा है... .? एक सौ तीस करोड़ जनता की शहीद संतानों के प्रति शुभेच्छा जाग्रत हुई. वह पड़ोस गुंडा देश की प्रायोजित हिंसा इस देश को क्या बरबाद कर देगा..? हमारे लोगों के बीच दरार पैदा करके आन्तजातीय बुरी ताकतें हमारे विकासशील देश को कमजोर बनाना चाहते हैं तो जिस देश प्रेमी नेतृवर्ग हमारी सुरक्षा के लिए निष्ठा पर उद्यम कर रहे हैं उनके पैरों को खिंचने क्यों ये घरके विभीषण लोग कपट कर रहे हैं....? गंदे पानी से नुकिले दांत वाली मछलियों को पकड़ने की अपचेष्टा क्यों कर रहे हैं...? आखिर दन्ताघात नहीं पाएंगे...? इस देव भूमि पर युग युग से शैतान पराहत हुए हैं. हमारी ज्यादातर भूल चूक ही असामाजिकता पैदा करने का माहौल बना देती है! आजकल भी आतंकवाद भिन्न अलग रुप में उभर आ रहा है. असमानता अर्थनीति वैषम्य के कारण यह अहिस्ता आहिस्ता पनप रहा है. एक ही देश में एक ही नीति, आईन कानून अगर यहां प्रचलित किया जाता तब इस प्रकार नौबत तथा जटिल कुटिल कीचड़िला मार्ग दिखाई नहीं पड़ता. कपटी शाकुनिक चाहत पर लोग लगाम कस सकते!

काम, क्रोध और लोभ में डूब कर देश द्रोह की भित्ति भूमि उभर आती है. कुसंस्कार, अन्ध विश्वास, काम चेष्टा, नारी नियतिना, बहु विवाह, बाल्य विवाह, नशा सेवन, अनायत सांप्रदायिक उत्तेजना, बलि प्रथा, इन सबके विनाश के बिना इसका प्राथमिक उपचार और कुछ नहीं है. चंद मुष्टिमेय दुष्ट लोगों का एकत्र उद्यम और प्रतिवेशी चक्रांतकारी देशों का विध्वंसकारी लालच भरा प्रकल्प समूह बेकार हो जाता है अगर हम सचेतन हो जाते! हमारे सामूहिक हित के लिए सर्व समानता ही अब्बल मंजिल होना चाहिए! इसके लिए हमारी सामूहिक त्याग पूत भावना जाग्रत होनी चाहिए. हां, अलबत्ता जनगण, समस्त लोग चेतनशील हो जाए तो हमारी उबड़ खाबड़ मनोभूमि सपाट समतल हो जाएगी! नव विवाहिता 'कमली' जैसी औरों के माथे से सिंदूर कभी ओझिल नहीं हो सकती....! खतरे की बाढ़ दो किनारों से आगे समुंदर की ओर चल जाती.....

+++++++

हलो कमली! अब तो सीमान्त से लौट कर शिविर पर आया हूं. अभी तो दिवाली आएगी न, उससे पहले ही मैं घर पर पहुंच जाऊंगा. मेरा छुट्टी दरख्वास्त मंजूर हो गया है. वहां हमारी शादी की वर्षगांठ में चारों ओर दीए जलाएंगे, पटाखें, आतिशबाजियां लगाएंगे, भाई-बहनें, बाबा, मां के साथ त्योहार मनाएंगे. जगन्नाथपुरी समुंदर के तट पर बहुत देर तक घूमेंगे, खुशियों की लहरों में नहाएंगे, उल्टे ज्वार के पीछे छोटे-छोटे केकड़ों का पीछा करेंगे. बालूका शिल्पी की मत्स्य कन्या और सांप्रतिक समस्या तथा समाधान संकेत की चित्रावली देखेगें. टाईमपास मूंगफली खाकर छिलके कूड़े दान में फेंकेगें...

कमली- तुम तो सिर्फ सपने दिखाना ही जानते हो. मुझे साथ लेकर उसमें कैसे तैरना होगा सिखा दिया था. लेकिन पूर्ण मनबोध अभी तक हुआ नहीं तरुण अरुण, प्यारे जीवन साथी मेरे.....!

अरुण : सिर्फ चंद दिनों की मुहलत चाहिए. जरा सबर करो. थोड़ा और इन्तजार कीजिए जनाब.....!! जब अमानुष आक्रमक लोगों की नाक

में दम आ जाएगा तब इसके बाद ही तुरत आपके पास इस बंदा फौरन हाजिर हो जाएगा, मेरी प्यारी नर्गिस ए दिल...!

कमली- कब यह मुमकीन होगा....?

अरुणः सूर्य चंद्र के विपरीत मति गति में जब राहु केतु का प्रभाव गिरेगा, उस दिन तो निकटतर हो गयाा है प्रिये.....!!

कमली- क्या कहते हो, बिलकुल समझ नहीं सकती....

अरुणः इतनी शीतलता के भीतर भी हम दोनों तप्तपानी में तरोवतर हो रहे हैं. प्रिये, यह कितना पावन, इस मिट्टी मां ही जानती है. मेरा देश मेरी हिफाजत करता है. मेरे परिवार का प्रतिपोषण कर रहा है. मेरे असुमारी सपनों का इंद्र धनुष के चकाचौंध में आखं बंद हो जाती हैं...! जरा इन्तजार करो और कुछ दिन..कल तो कुमार पूर्णमी चल गयी और दस या बारह दिनों के बाद ही शीघ्र आ रही है लुभावनी दिवाली...! हमारे दो दिल एक हो जाएगें उस दिन..तब तक दूरी का इन्तजार निभाना होगा.

कमली : यह दूरन्त प्रतीक्षा क्यों कह रहे हो?

अरुणः: 'पास रहने से,
बिछोड़ जाने का डर,
जड़ उग आती है
रहने से दूर.....!!

कमलीः 'तन मन की मीठी कथा,
दूर होने से बड़ी व्यथा....!'

अरुणः हंसाती रही हो प्रिये! खैर, मिलन के लिए थोड़ी और उत्कंठा चाहिए, जो अच्छी लगती है कमली...! हां, अब इस वक्त बिगुल बज रहा है, भोजन प्रस्तुत हो गया, बाद में बातचीत होगी. बाई.....विदाय..... अलविदा....

कमलीः नहीं....नहीं, ऐसा मत कहो...बिल्कुल विदाय नहीं..कहो, आदाय. ..! बड़े प्यार से कहो...कहो ना प्लिज.......!

अरुणः हां बाबा, 'आदाय.....!' हुआ न...?

+++++++++++++++

ऐसे ही सुख दुख भरी जवान जोड़ी में अचानक भूस्खलन आ गया हिमवन्त शिवालिक पहाड़ी संकरी रास्ते की भांति....! दुश्मन देश के अतर्कित मध्यरात्र आक्रमण के दौरान शायरन बजने लगी...! उत्तर-पश्चिम सीमांत के लोहे की कंटिली तार के पास चौकी पर जाने का आदेश हुआ है. हमारे कर्त्तव्यरत बफादार सैनिक लोगों के साथ अपने वतन की हिफाजत के लिए कमर कस कर अरुण जी लग गए, लेकिन शहीद हो गए! उनके अधूरे ख्वाब को पूरा करने के लिए स्नातक कमली भी सैन्य वाहिनी में शामिल हो गयी. उसने शपथ ली कि आक्रमक देश से जबरदस्त छीना गया अनाधिकृत विच्छिन्नांचल को लौटा लाने के लिए अपने खून का आखरी कतरा कुर्बान करुंगी!

यहां अदृश्य अरुण की आवाज आई. सत्यमेव जयते कमली! एक न एक दिन अच्छी बात का ही वजन बढ़ जाता है. हमारी मातृभूमि भारत वर्षा ने समूचे विश्व के असहाय शरणार्थियों को यहां आश्रय दिया है. इसीलिए इसकी औलादों को जो अनाथ कर देना चाहता है, उन्हें चौर्य वृत्ति, नशा करोबार नकली मुद्रा प्रचलन और खून खराबे में लिप्त करवाता है, उसका ऐसा एक दिन जरुर आएगा ताकि अपना अस्तित्व भी पृथ्वी मानचित्र से निश्चित रुप से मिट जाएगा...! हम प्रभु के ऊपर विश्वास रखकर बिना किसी विकार से अपना प्यारा कर्त्तव्य निभाते रहेंगे. इसी से अधर्म अलबत्ता विनष्ट हो जाएगा! प्राकृतिक शांति की ही विजय होगी! इसीलिए हमारे सब भाई बहिनें एक जूट होकर सहभागिता लेकर परिपूर्णता की ओर मिल जुलकर आगे बढिए....! इन्सानियत की ही विजय होती है!

कमलीः आपका यह अनमोल पैगाम आज के तरुण अरुणों को जरुर उद्बुद्ध करेगा मेरे प्यारे जीवन साथी......! आज आपको समग्र देश श्रद्धांजलि दे रहा है, उसे स्वीकार कीजिए, नमस्कार!

मुखौटा का प्यार

प्रवास में एक पड़ोसन का सुन्दर मुंह, आंखे चंचल....पल पल में तिरछी नजरें....! ऐसे माहौल में डॉ. केदारनाथ यहा 'अकेला रह कर बच्चों को पढ़ाते थे. प्रतिष्ठित विद्यापीठ, अपनी मर्यादा ही निखार लेती थी पौरुष को. खतरे के साथ खिलवाड़ करने जब नेक नामी घट जाएगी तो मौत को बेहतर वे पसंद करते थे, क्योंकि बच्चों के वे धर्मबाप मानते थे. एक दायित्व संपन्न गुरु थे. यह एक देहाती गांव की दिलचस्प कहानी थी. जहां विद्यार्थियों के लिए पढ़ने की अच्छी तरह इन्तजाम सुलभ नहीं था. वहां लड़कियों के लिए बहुत मुश्किल की बात थी कि अतिरिक्त पढ़ाई के लिए बहुत ही अड़चन महसूस हो रही थी. नाकामयाबी ही यहां के दिवाध यायी हासिल कर रहे थे. इस प्रकार स्थिति को बदलाने की हिम्मत और साधना उस दार्शनिक कवि उर्फ उस उच्च विद्यालय के शिक्षक ने ली थी. बच्चों की कामयाबी शत प्रतिशत होने लगी. उनमें से थी ऊपर वर्णित औरत की बेटी 'सुहानी'' भी, जो इम्तहान में अब्बल आई थी. यह इतफाक हो सके या विधि निर्दिष्ट अदृश्य ही जानता था. लेकिन अब के लिए यह भी खुशियों का माहोल पैदा कर दिया था कि गुरुजी का कहना था कि जो बच्ची परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण होगी, गुरुजी स्वयं अपने होनहार बेटे के लिए उसे बहू बनाने की सफल कोशिश करेंगें. इतने में बच्चियों की कमजोरियां धीरे धीरे पाठ्य ससाधनों के द्वारा दूर हो गयीं. निष्ठा भी आ गई. सुहानी का सितारा भी चमक उठा. निरपेक्ष कैशोर बर्ताव और सृजनशील अध्यापन गुरुजी को ऊंचे स्थान पर ले गया. लड़के और लडकियां गुरुजी को बहुत आदर सम्मान करने लगे जिससे वे उनसे खाली समय बहुत दूरी पर ही रहने की कोशिश करते रहे थे. फिर भी संसार की गणित बड़ी विचित्र है. गुरुजी सुहानी के परिवार के आग्रह पर उसे बहू बनाने के लिए भी राजी हो गए. अब जीवन की असली परीक्षा आ पहुंची. गुरुजी ने पहले की बच्ची से गृहस्थी सही ढंग से चलाने में हिस्सा लेने का

वादा चाहा था जो सुहानी समेत उसका सारा परिवार भी एकमत हो गए थे. लेकिन हुबहु बातें कभी कभार सही निकलती नहीं है जैसे आजकल के खाद्य पदार्थो में बाजारु मिलावटे उपलब्ध है. सास ननद पर असूया भाव एक ही साल के बाद ही सुहानी के दिल में पनपने लगा, जब उनकी कड़वी बातों से मर्म भेदने की नौबत आ गयी थी! बहुत कुछ सहन करने से ही अत्यधिक मौका हासिल कर सकोगी बेटी, गुरु ससूर की इस सलाह मशबीरा को कभी भूलोगी मत! लेकिन सब कुछ उलट गया. मैं कोई मसीहा नहीं जो गैरों का उलाहना हंसते हुए पी डालूंगी बाबा. बहू ने कहा, 'आप के बेटे से पूछिए न कि कैसे वे सब लोग मेरे पीछे पड़ गए है कि घर गृहस्थी का काम काज मैं ही करुं तो उनके मुताबिक मेरा कसूर क्यों दिखाई पड़ता है? आप के ही घर में रहते हुए सरकारी नौकरी हासिल कर ली लेकिन कब तक ये उलाहना के बकशीश मुझे मिलते रहेंगे? अन चाहत रिस्ते नाते मुझे भाते नहीं. मेरी मम्मी और डैडी भी इन्हें अच्छे नहीं लगते. अब क्या करूं, कहिए न बाबूजी..?

यही सही सवाल का जबाब ढूंढने से आखिर मालूम हुआ था कि उन शुरुआती आंखों का कमाल, खुली बाहों की अंगड़ाई, रंगीन होठों का इशारा, आदमी बनें बेचारा... तब भी मास्टरजी के इर्द गिर्द वह नौबत घूमती फिरती थी. पर, वह बहुत ही फासले में आवागमन कर रहे थे. फिर भी एक दिन रुनझुन पदपात से अपने नाती को समधी की गोद से लेने वही प्रोढ़ा आ गई. सुदृढ मर्दानगी लगभग हिल गयी! मास्टरजी स्थम्भित हो गए. उसके बाद न जाने क्यों तबादला अपना कर उस गांव से मास्टर जी ओझिल हो गए! किस्सा भी खत्म हो चुका था लेकिन यह बहुत खतरनाक असरदार था और दो साल लग गया घाव भरने के लिए. मगर चट्टान की दरार से स्वतः स्फूर्त कविताओं का भरमार प्रवाह भी बहने लगे पत्र पत्रिकाओं में कलम का आकर्शाणीय विचार दिखाई पड़ा. अब तक इसका सुराग किसी को भी मालूम नहीं हुआ है. उस मौकेबाज मुखौटे की कहानी सिर्फ धोखाधड़ी ही थी मृगतृष्णा भी! आखिर इन सबका प्रभाव यह हुआ कि बहू और बेटे दोनों पोते के साथ मूल परिवार से अलग हो गए.

स्वर्ग नर्क

पुत्र न होने से दंत कथा तथा पुराण में वर्णित है कि इन्सान खतरनाक पुत नर्क में गिर जाता है. वहां से उबर नहीं पाता है क्योंकि उसके बिना पैतृक वंश लता आगे बढ़ नहीं सकती! अगर नालायक पुत्र पिता माता तथा समाज के सन्तुलन को बिगाड़ देता है तो बेताल जिन्दगी की असीम नर्क यातना क्या भुगतना अवश्यभांवी नहीं हो जाता है.....?

अवश्य प्यारे बच्चे नादान हैं. उनकी अच्छी तरह की परवरिश करना पिता माता को मालूम नहीं था, जबकि इस संसार के दूसरे लोग अपने बच्चों को लावारिश छोड़ दिया करते थे. आखिर नतीजे में वे सही सलामत उभर आ जाते थे और इस दुनिया के जुल्म झेलने में माहिर भी हो जाते थे. जालिमों का सरदार बन कर सोना चांदी के बनिये बन जाते है और तमाम लोगों पर राज जमा कर तंदुरुस्त आदमी औरत की जिन्दगी निर्वाह कर सकते थे. पर, बच्चों को सही मायने में शाम दाम दण्ड भेद दिलाकर जिसे सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए उपयुक्त तालीम दिया जाता है, उसके अन्तर की कुछ बचे खुचे नाकामियों को भविष्य की राजरानी कुल बधुएं निहायत अनुदार असंस्कारित स्वार्थ पर घरों से आकर वृद्ध मां बाप के जिगर के टुकड़ों को तितर बितर कर देती हैं. अवश्य, सुलक्षणा गृह लक्ष्मी नारी ही पूज्या है जो बिगड़ो को सही दिशा में लाने में मदद करती है और देवत्व का संरक्षण भी.... लेकिन दुष्टा नारी, तकलीफ झेलकर गुरुजनों के द्वारा बनाए गए बया के घोंसले को तोड़ डालती है. करुण क्रंदन को अनसुना, अनदेखा कर देती है!

इसी संदर्भ में तीन भाई, उनकी पत्नियां तथा एक मात्र बहन की कहानी कितनी मर्मन्तुद है.. तीनों दंपति आदिम लालसा और हीन मनोभाव तथा लोभ ग्रस्त आंचल में हमेशा छिप कर पक्षी राज घोड़े के ऊपर सवार होते हुए निरे सपनों में ही तैरना अपनी आखरी मंजिल तय कर लेते हैं. पर अचानक वृंतच्यूत हो जाने की संभावनाओं को भी डींग मार कर पल्ला झाड़ देते हैं. जमीन जायदाद रास्ते में मौकाबाज अपने करीबी रिस्तेदारों को बेच कर ऐन वक्त पर प्रशिक्षण संस्थानों में भर्ती करवाकर कामयाबी हासिल करके सही ढंग से आदमी बनाने को तत्पर, कम तनख्वाह पाने वाला शिक्षक पिता ने खूब ख्वाब देखे थे कि उनके बच्चे पांच पच्चिस आदमियों में सुप्रतिष्ठित हो जाएंगे, बुढ़ापे में अपने मददगार निराश्रित माता पिता दोनों की अन्ततः काम चलाऊ सेवा सुश्रुषा करेंगे, जो कि नामुमकीन हो गया. इसका कसूर क्या हो सकता है...? बेचारे सपत्निक मास्टर कभी कभार सोचा करते हैं कि उनकी लाडली लाचारी बेटी बेवक्त अपरिचित जालिम स्वामी से परित्यक्त हो गयी!

तीनों भाइयों के परिवार द्वारा नफरत के मारे अवहेलिता हो गई. इसे हिफाजत करने से चक्षुशूल हो गये? यह कैसा अविचार है उन स्त्रैणों का? जिस्म की भूख और पत्नी उपार्जन की दुगुनी आर्थिक लालसा के आगे अपना अनमोल पौरुष भी तुच्छ हो गया! भोगवाद के आगे त्यागपन भी अवहेलित हो गया? नर्म कोमल ऊंगली से बन्दरिया नाच को तीनों भाई अहो भाग्य समझ कर ऊहापोह अपना लिए? अपनी पढ़ाई, आदर्श, संस्कार व सामाजिक खातिर को भी लात मार दिया गया?

कुल बधुओं को लाज शरम, फर्ज निभाने के वादे, रहन सहन, नम्रता, आचरण विचरण सब भुलाए गए... सिर्फ जान्तव क्षुधा की ही विजय उभर आई! वाट्सएप में नगी जवानी की तस्वीरें तैरने लगीं. यान्त्रिक ग्राम्य भाष में गोपनीय चित्रावलि थिरकने लगी. हाय हाय री नालायक औलाद, कुछ तो होश में आओ! दुनिया की नजर में गिरावट

मत लाओ! अपने बाल बच्चों के भविष्य निर्माण की चिंता करो.

महामारी भूताणु 'करोना स्पर्श' की भांति कुसंग भी इन्सान को नष्ट भ्रष्ट कर देता है. इसी से सामाजिक दूरी रखो. सावधानी से जीते रहो. होशियार..! अब तो फौरन मध्यान्तर आने वाला है तुम्हारे जीवन के चलचित्र में...! इन तस्वीरों की निवृत्ति से ही तुम्हारी अपनी भलाई है. अमन चैन है. शांति व चरमतृप्ति है और ज्यादा वक्त मत गंवाओ. रक्षकों को भक्षण मत करो! फौरन तीसरी आंख निकालो. खुद जियो, लाचार पिता माता की देखभाल करो. फूलों और फलों. संसार को कुछ भी दान करते रहो. समय समुन्दर के किनारे अपने पद चिन्ह को मत मिटाओ! अपनी वसुधा को जरा ही सुधार डालो! यह आधुनिक पुत नर्क दर्द को मिटा दो! सृष्टि को सार्थक करो. अनन्त त्याग पूत प्रेम प्रीति की सौगंध खाकर जिन्दा रहो. कृष्ण बलराम और सुभद्रा के ममता स्निग्ध आदर्श की रक्षा करो! संसार स्वर्ग को उजियार करते रहो.

गर्दन

'सर! जरा सुनिए...!' हांपते हुए एक युवा छात्रा पीछे से बुला रही थी. पाठागार से निकलते वक्त घूमते हुए मैंने देखा कि एक आधा पहचाने मुंह से मुस्कराहट फैल गयी. लंबी गर्दन झूक गयी. प्रणाम जताने! उसकी गर्दन के बीचों बीच जग मगा रही थी मांसल एक तिल चिह्न पर सुनहली किरण! सुंदर एक सोने के हार से रोशनी फैला रहा था रत्न जड़ित एक पदक, युवा छात्र ने कहा, सर, इतने सालों के बाद मुलाकात हुई. आप तो मुझे कटक नगर में हिन्दी पढ़ा रहे थे. याद है न...? शायद भूल गए होंगे, इस बेचारी 'टुकनी' को...?

अचरज में मेरा होंठ हिल गया, 'टु..क....नी...! हां, तुम न वही लड़की, जो सिनेमा के हिट सूर लेकर देशात्मबोध गीत लिखती और गाती थी?'

सर, याद की डस्टबीन में धन्य हुई...हां, साहित्य सेवा के लिए आप का आशीर्वाद ही आज अचानक मुझे आपके साथ मिलवा दिया!

अच्छा देखो टुकुनी, अभी मेरा कालिज है, मुझे वहां जाना है. खैर, तुम यहां कैसे?

सर, पिताजी रिटायर के बाद यहां ब्रह्मपुर सहर में बस गए. दरअसल, बात यह है कि मेरी अपनी कई हाथ लिखी कहानियों का संशोधन, दिग्दर्शन चाहती हूं, इसीलिए आपका ठिकाना, कृपया...?

हां, हां...रविवार आओ, यहां गांधी नगर, दूसरी गली.

+++++++++

ठीक अगले रविवार के दिन टुकुनी आकर प्रणाम जताई. गृहिणी भी उसे पहचान कर पास बिठाई. आन्दोलित जेबर के साथ उसके तिल

चिह्न को देखकर गृहिणी पूछी गल बंधनी तो तेरे तिल चिन्ह को पहचानने में दिक्कत नहीं की बेटी!
हां मौसी, मंगनी हो गई है. लड़का जो अभी नौकरी में तैनात हुए हैं.

सच? अच्छा, भोज कब मिलेगा....?

मिलेगा तीन महीनों के बाद मौसी..

उनके कथा सूत्र में मुसीबत डाल के मैंने ही कहा, 'टुकुनी, पाण्डुलिपि लाई हो?

सर! निकालती हूं...शीर्षक 'गरीब की बेटी'

++++++++

उसे सुनने के बाद मैंने मंतव्य दिया, हां, तन्हाई में यह जो कहानी मथित हुई है, इसी से आंसू बहने उपक्रम ही होता है. चलती ग्रामीण भाषा, मुहावरे कहावतों का उचित प्रयोग, दहेज शिकार एक पढ़ी लिखी औरत का जीवन तथा उसके मूल्यबोध खो जाने से लेखिका की व्यावहारिक चिंता तथा सुझाव, कुल मिलाकर ये सब चमत्कार है टुकुनी. .! कहानी अच्छी है. समकालीन है. लिखती चलो. अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखकों को ऐसे ही स्वदेश प्रेम का नजीर आज दिखाना है. ताकि हमारा भाषाई विवाद तुरत मिट जाएगा. हमारा बहुभाषी देश मानसिक स्तर पर एक हो जाएगा.

++++++++++

और एक दिन टुकुनी तिल चिन्हित ग्रीवा नंवा कर पाण्डुलिपि के साथ आई. पर वह विषर्णा थी. लेकिन कहानी पढ़ते वक्त आत्महरा हो जाती थी. खासकर मेरी समीक्षा, सुझाव से प्रभावित होकर वह प्रोत्साहित हो जाती. 'विषफल' कहानी पढ़ते वक्त फिर टपका रही थी अविरत आंसू..! मैंने चौंकती नजर में आधा रखा दी कहानी! गृहिणी ने आखिर पूछा, बेटी तेरा क्या हो गया मां..?

आंसू पोछती हुई बातें भुला कर उसने कहा, 'कुछ नहीं, मौसी, यूं ही आजकल लड़किया दुनिया की मेहरबानी से गुजरती है. आज भी

दुलहन का बाप दहेज का शहीद है! अधूरी कहानी फिर पठित और आलोचित हुई. सांध्य अन्धकार को आलोकित करके तिलांकिता उसकी ग्रीवा झूक गयी विदाय के लिए.

++++++++

'बन्धन' कहानी को पढ़ने के बाद प्रगलभा नव्य साहित्यिका टुकनी कह रही थी, सर, इन लड़कियों की गर्दन है सिर्फ पगहा (रस्सी) बांधने के लिए. न कि मुक्त गर्दन में एलान करने आजादी का पैगाम? इसके बारे में कृपया कुछ तो बताइए न सर...! भारतीय शांति है इसमें बेटी! ठण्डे मिजाज में सोचना हमारा धर्म है. फिर भी उस बंधन का नामान्तर 'पगहा' न हो, दो दिलों की आपसी अमृत श्रृंखला कह सकती हो उसे.

++++++++++

दूसरे दिन मुरझायी ग्रीवा से प्रणाम जता कर उसने शुरु की, 'अभागिन' कहानी! वास्तव में उस दिन वही मांसल गोल तिल चिह्न सुनहरी रोशनी से वंचित था. हमारी प्रश्नवाची मुद्रा को छुटकारा दिलाकर वह कह रही थी, हां सर....अभागिन नायिका की भांति मेरी भी किस्मत फूट गई. अवश्य, आज उस मंगनी निशाने को बेबुनियाद वे लौटा लिए. क्योंकि वे एक जन बहुत पढ़े लिखे गुमाश्ता है. शादी के तराजू में वजनदार भी. लेकिन हमारे खरीदने की ताकत तो सीमित है. फिर भी सर, आप जरुर देखेंगे कि इसी से मैं कभी कमजोर नहीं हो जाऊंगी...टूट नहीं जाऊंगी..फर्ज की राह पर फिसल नहीं जाऊंगी. अपनी सृजनशीलता ऐसे ही ठोकर खाकर कभी कंकड़ कठिन नहीं बनेगी. अवश्य गर्दन-बंधनी का छाप सिर्फ चंद दिनों के लिए अमिट रह जाएगा ही!

दिलासा देते हुए अध पढ़ी कहानी को मैंने मेज पर रखा दिया।

+++++++++++

एक माह के बाद....और एक दिन की बात है. मैं निमंत्रित होकर आया था पूर्वोक्त उस पाठागार के वार्षिक सारस्वत समावेश को. मुख्य

वक्ता की हैसियत से 'आज की मुसीबत भरी जिंदगी और कहानी' शीर्षक पर भाषण देकर कार्यक्रम के उपरान्त लौट रहा था शहर की बस्ती से गुजर कर. राह पर दिखाई पड़ा एक दंगा फिसाद! सुनने को मिला अति परिचित एक नाम के साथ गहरा उसका नाता! दिल चुभ गया. कुतूहल में घटना पर मेरे पैर हाजिर हो गए.

शिशुपाल की तरह एक तरफा एक विवाहित प्रेमी एक झोपड़ होटल के खंभे शक्त बंधा हुआ था, क्योंकि उसकी अवहेलिता वाग्दता क्वारी लड़की को फंसाने का दण्ड वह भुगत रहा था. नाम मात्र उस होटल की मालकिन के हुक्म को कामयाब करके बगले बजाते थे होटल के दो जन तंदुरुस्त आधा पढ़ा कर्मचारी! लेकिन होटल में श्याम की लालटेन की धीमी रोशनी मालकिन की दीर्घ ग्रीवा के तिल चिन्ह को छायालोक में आंख मिचौनी खेलती थी! उसकी गर्दन पर दाग लगाने वाले हार की छॉह उस वक्त मिट गई थी!

फैक्टरी बसेगी

ये सुंदर पहाड़े चकनाचुर हो जाएंगे. उन्हें घेरे हुए पेड़ पौधे, जानवर चिड़िया सब अनाथ हो जाएंगे. नामहीन छोटी छोटी झर्नाओं को गाड़ दिया जाएगा. पसीने से भीगी हुई धरती मां को सिमेंट कांक्रिट के भीतर कब्र दिया जाएगा. यह असहनीय है. हमें कहते है कि निर्बोध, मूर्ख. लेकिन बाबू अगर जीवन चाहते हो तो मिट्टी मां वो ऐसे साफ कर देने से धर्म कतई सहन नहीं करेगा. भूचाल हो जाएगा. प्रकृति इसके अंदर ही समा जाएगी. आदमी की करतूत से बचने के लिए. ऐसे ज्यादा उतावला होने से आदमी मरघट की फसल ही बन जाता है. जीने के लिए ज्यादा सयानापन मत चाहिए. चंद बेवकुफी भी चाहिए.. ये जंगल ये पहाड़ें, झरना, जानवर, चिड़िया और कानों को मधुर सुनाई पड़ती उनकी चहचहाहट.... उनके साथ आदमी का गहरा सलुक चाहिए.

परन्तु इंसान ने अपने बंद विज्ञानागारों में बैठे इस इलाके की मिट्टी के नमूने लेकर शोध किया है. मिट्टी से ढूंढ़ लिया है 'सोने का खदान'! अंजाम यह हुआ कि वह फैक्टरी बसा कर कच्चे माल से निकाल सकेगा साफ सोना! उन सबसे आदमी तैयार कर सकेगा अनमोल जेबर! लेकिन पेट को फाड़ कर गर्दन ओढ़ने से इन्सान कैसा अपना ज्यादा उपकार पाएगा?

मिट्टी मां की दी गई अनाज से प्रस्तुत खाने को छोड़ कर बनावटी खाद्य के विकल्प से क्या उसका कुदरती विकास मुमकीन हो पाएगा? फिर भी आदमी का घमण्ड फूला नहीं समाता...! जैसे, वह कहने लगता है, 'मैंने तो कुदरत जीत ली...!' वाह, वाह रे आदमी....! यह तेरा कैसा करिस्मा...!

बेरोजगार आदमियों को काम मिलेगा, फैक्टरी बसेगी...यह ढिंढूरा सुनकर जंगली, देहाती आदमियों की कतार दौड़ आई चौक के ऊपर. ...! सुन सान जगह शोरगुल में बदल गयी! उसके ऊपर रुपयों की बौछार भी पड़ी! मजदूरों की दौड़धूप में इन्सानों की चीख आसमान में लीन हो गयी! आदमी रुपयों की पूंछ पकड़ कर अभाव की वैतरणी पार होने लगे. लेकिन उसका रेतीला किनारा ना खत्म होता ना आदमी के अपने फटे पैरों के दो कमजोर टांगे तुरंत आगे चला सकते... सिर्फ रुपयों के शिकार के लिए इन्सान में इतनी चहल कदमी मच जाती है! वह होड़ में बाजी लगाता है. बीचों बीच उसकी लेई पूंजी अपनी हथेली से सरक जाती है. कान्ट्रैक्टर की पांव रोटी सा तंदुरस्त गाल में खटमल का लाल रंग उभर आता है. फिर भी विदेशी कंपनी के बाबू भैयों को स्वदेशी स्वाद जुटा कर यहां मजदूर बस्ती में दलाली करके कांन्ट्रैक्टर जी ने रुपयों की नदी बहा दी. आधी रात में औरत पैरों के मधुर निक्वण मजदूर बस्ती से विदेशी पड़ाव तक उसकी अभय वरदा मुद्रा से सर गरम हो रहा था. धन जन गोप लक्ष्मी का झनतकार आज का मसीहा बन गया है.

वाह विदेशी फैक्टरी...वाह स्वदेशी स्वाद..! तुम्हारा यह सिलसिला कब तक जारी रहेगा? फैक्टरी की सायरन क्या बजती रहेगी इन्सान का गला घोंटते हुए..? और दुनिया का दर्द...मनुष्य का दिशा हरा कुंथन. ...? इन सबका अंत कब होगा? फिर भी औरत मर्दो का ढेम्सा नाच युयुग्म नृत्य के ताल पर सुनाई पड़ती थी विदेशी साहबों की अस्पष्ट मंत्रणा, 'फैक्टरी बसेगी!'

मुक्ति

तुमने सब सोचा है कि तुम आज मुक्त हो, मैं लेकिन कहूंगा कि तुम, हम, ये मनुष्य जाति सब सिर्फ सामयिक कल्पित मुक्ति बोध के पूजक हैं!

हम तो पराधीन नहीं, परदेश की जंजीरों से हमारे हाथ पांव जकड़े नहीं...!

अवश्य, वह बात झूठ नहीं है. पर यह बात भी सच है कि कौरवों के निधन के बाद कौरवीय जुल्म तो खत्म हो गया है फिर यादवीय विश्रृंखला क्या पतनशीलता की शुरुआत नहीं है...? इस प्रक्रिया को क्या सृजनबोध की कायरता के रूप में नकारा जा सकेगा.

आजकल तो आप आदर्श के प्रेत को भी रंगीन बनाने चाहते है! क्या वह युग के मुताबिक हो सके प्रताप बाबू?

अंदरुनी ज्वाला युग अंधियारे को जरुर सुलग देगी अरुण बाबू...

तब अपनी सत्ता की डगमगाहट से तुम कब बचा पाओगे?

जब तक पहले की भांति आप स्थिर, अविचलित रह सकें!

ये सब महफिल के भाषण, संभाषण, चिंतन, लेखन के भीतर ही सीमित है..

सृजन शक्ति के स्फूरण में भी व्यर्थ मुखर हो सकेगा, अरुण बाबू।

यह सुन लीजिए, बाहर दरवाजे पर किसकी दस्तक.....!?

मैं दरवाजा खोलके आ रहा हूं....

+++++++++

बाबू, दलित कल्याण विद्यापीठ के सह शिक्षक श्रीयुत डॉ. प्रताप किशोर मिश्र, एम.ए., पी.एच.डी., डी.लिट. का वास भवन यही तो.?

हां, 'बात क्या है, पोस्ट मैन जी!
सर, आपकी एक रजिस्ट्री चिट्ठी.
अच्छा....पढ लूं......
'इनकिलाब की फरियाद से तुम्हें नौकरी से बरखास्त किया गया...!'
तो सभा समिति के अलावा अब भूखे पेट में भी इनकिलाब का बसेरा हो जाएगा. अरुण बाबू.
यह क्या बकवास है प्रतापबाबू, उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, कुछ भी हो जाए. बरना सपरिवार बेचैन हो जाएंगे...!
ठीक कहा है अरुण बाबू, तुमने. इस देश की चारों ओर अब भी मशाल की भूख है. इसे मिटाने अगर मैं शामिल न होऊं, तो मेरा जीवन भी बेकार हो जाएगा! घर संसार करके तो जिंदगी की भूख से पैठ गया हूं!'

पहले से कहा रहा हूं कि आंखें है, देखें, कान है सूनें लेकिन मुंह है सिर्फ बंद करके बैठेंगे. सोते के किनारे बैठकर उछलती मछलियों को टक करके निगलते रहें!' फिर यथा पूर्व तथा परं' यह सूत्र रट कर रामूलू बाबू, फिल्ड पर झंडा फहरा सकते हैं. यह सूत्र भूल कर पानिकर बाबू अच्छी तरह चाबूक खा रहे हैं और यह सूत्र रट कर खूद एम.ए., बी. एफ. यानी मैट्रिक आपियार्ड, बट फैल आज स्वयं सेक्रेटरी महोदय का तो मधुर संपर्कीय बन गया हूं! आखिर आपको सहपाठी समझ के दीक्षा देने में भी ना कामयाब हो गया हूं!

मेरी सूखी लकड़ी में आग सुलग रही है अरुण बाबू! खैर, इतना ग़म है कि आप जैसे लोग ही इस वतन में दुर्घटनाएं शुरु करते हैं!

एकादशी कीजिए प्रतापबाबू निर्जला.... उधर वतन उबर जाय. इधर आप भी... अच्छा अब मैं आ रहा हूं.
-याद है कविगुरु रवीद्र की अनमोल वाणीः

'तेरी पुकार सुनके जब
न आए कोई,
तब अकेला

चल रे भाई।
चलूं......चलने की कोशिश करूं...

+++++++

बाबू, एक मुट्ठी भीख.....
-बाबू, मेरी ऊँगली नहीं....
बाबू, मेरी हथेली नहीं......

बाबू, मेरे पेट में बच्चा....! पांच दिनों से कुछ खायी नहीं....
बाबू, ए बाबू....! एक रुपिया दीजिए न.
हां, हां.....एक रुपिया क्यों? यह सब चीजें ले चलो!
हां सही जगह, ठीक समय पर पहुंचा दो...!
हां बाबूजी...!
लेकिन बाबूजी, उसमें से हमें भी थोड़ा बहुत गंजा चाहिए!
सांः, कोढ़े, कुबड़े! फिर गंजा चाहते हो!
हमारे भी पेट है तो बाबूजी!
फिर पेट? अरे क्या मना करता है कोई? तो उसमें भी बच्चा रह सकता है और गंजा भी....?
ए बाबू, देख... ये सब तेरे बाप के जो नहीं है!
तू कमिशन एजेण्ट है और हम तो इस करोबार के अब्बल कारपटदार है! याद रख, अगर हमारी मर्जी न हो तो वहां तुम कोलहु पिषोगे...!
अरे, जा... जा... क्या कहा कि कारपटदार... बेटे, जानते नहीं गाजी उस्ताद को...!
अरे मारों, ससुर की औलाद को. गाजी का भाई हाजी, तेज का बेटा, राज माकिजा का साला पाकिंजा...! तुम सब क्यों देखा रहे हो! मारो छलांग.
अजी देखो... गौर से देखो...हम बेसहारों पर परदेशी जासूसों का कैसा जुल्म!
देश को निगल दिये रे....धर्म को डूबों दिए... फिर भी हम पर हुकूमत.

दो टूकड़ी रोटियों के लिए लार टपकाते रहे चामूच के झूंड़, जो तुम्हारें बाप का न यह देश.

सब तो तुमने लूट लिया रे....

अरे ससुरी, मुखौटा पहन कर देश को राख बना दिया रे...!

पकड़ो...खींचों....लाओ....ठेसों.

लेलो....रखलो....जाने दो... रहने दो...

गुडमू...गुडमू...

ढो...ओ....ओ!

हुत्...हुत्..हुत।

शांति...शांति... चैन से रहो...

कौन...? प्रताप बाबू...? वहां मत जाइए. खतरा..आग...

तकलीफों से पायी गई आजादी में आग...

फिर भी कैंफियत के लिए आप मामां के यहां चलिए....!

++++++++

एय नूनी[1]! ये सब्जी कितने भाव पर दोगी?

बाबू, निचुबे[2]!

मंडी तो बहुत दूर, तेरा बोझा भी हल्का हो जाएगा. दे दो. कितने पैसों से दोगी?

दो टाका[3] में देइसी[4] बे बाबू!

दो रुपये ....अरी, दो सिउका[5] की चीजों को दो रुपये!

नसिलाटा[6] क्या बाबू? ये रकम तो कत निक आछे[7],

हादे[8] हमारे गांव के वही कोई मास्टर बाबू, डेढ़ टाके में मांगा था, मुईं[9] निचली काई[10]...!

खैर, एक रुपये में दे दो नोनी..! तेरी किस्मत अच्छी है कि मण्डी पर गयी नहीं, बरना दलाल लोग तेरे सामान लूट गए होते....

काई[11], चोरी कर्ला, टाकि जे जुरि दे...? मुंई डरे नाईं बाबू

अरी, तुम्हारी भलाई के लिए ही हम आ गए है. ठीक भाव पर दे दो.

डेढ़ टाका दे बाबू!

नहीं, रुपये पर तय हो गया.

दे काई कासुटि और[12]

हां, हां..ले लो...गिन सिउके[13], दो सिउका..तीन दस पैसी...पांच पैसी एक हुआ न?

बाबू, पासुका[14], कइसे हुआ..? निचुबे[15], ए..ए...चल गया रे...मर गई रे बुआ[16]..! ये रांड का निसास पड़ि जाइसी[17] रे...! तोर कीड़ा रेंगिब[18] रे! आर कोन बाबू रे तुई[19]...? वही तो फलना बाबू डाबू कासु[20] तीन पुलिया नेइली[21], तुई क्यों कासुटा दे रहे हो बाबू..?

नहीं, तुम्हारा आंसू तुम वापिस ले लो! उस बाबू से मैंने इसे वापिस लाया है.

तोके महापुर[22], कइलाण[23] करे, तोर काई[24],नास बाबू.

नाम? नाम के बारे में मत पूछो या कहो! इस नास के परिचय से ही जितनी भूल की शुरुआत हो जाती है. इस नाम और उपाधि के प्रताप से ही स्वार्थ की नींव पड़ जाती है! यह नाम तुम्हारे पास, मेरे पास, सबके पास है और यह मैं भी सब के पास है! उसका छुटकारा चाहिए उसकी रोशनी चाहिए! तब ही अंधियारा दूर हो जाएगा, दर्द से छूटकारा मिलेगा! इसमें इन्सान की मुक्ति है, समाज की सत्ता भी...!

1–लड़की, 2–जी नहीं, 3–रुपए, 4–देती हूं रे बाबू, 5–पच्चीस पैसे, 6–नष्ट हुआ, 7–कितने अच्छे है, 8–वहां, 9–मैं, 10–मना किया, 11–क्यों चोरी की जो छीन लें, 12–पच्चीस पैसे, 13–एक रुपया और पच्चीस पैसे, 14–नहीं तो, 15–बाप, 16–गिर जाएगी. 17–रेंगते रहे, 18–और कौन, 19–रुपए पैसे, 20–मुफ्त ले गया, 21–महाप्रभु, 22–कलयाण, 23–क्या

हिजड़ा

आः मुझे मत मारो.....!

नहीं तो क्या तेरी पूजा करेंगे?

उसकी वजह क्या सुनूं तो....!

तुझ जैसी बेशर्म-लौंड़ी से कहने की क्या जरुरत है?

हां, मैं ही जानती हूं कि इस हादसा की वजह क्या है. लेकिन तुम्हारी समझ में यह भिन्न है.

भिन्न कह कर तुम्हारी पढ़ी लिखी तिर्या चाल चलाने की पूरी कोशिश के बावजुद भी हम तुम्हें छोड़ेंगे नहीं!

यह बुरी नहीं है, अपनी बेकसूर हकीकत है! सुन लीजिए पहले! उसके बाद गांव की भलाई के लिए मुझे जो सजा दोगे, खुशी से अपना लूं...

++++++++++++++

जब मैं हाईस्कूल से उत्तीर्ण होकर कालेज में दाखिल हुई, तब से इसकी शुरुआत हुई थी! हमारे मुहल्ले के कालेज के एक मवाली युवक मेरे पीछे चींटी की तरह लग गया! वह था यही वरुण! लाखों कोशिशों के बावजूद उसकी मुरादें ना-कामयाब हुई! एक दिन तो उसका कुस्सित निवेदन सुनकर मैंने जवाब दिया था कि क्या उसकी मां बहिनें नहीं हैं...? ये बातें सुनकर वरुण ने फौरन कहा था कि ऐसे अरमान को पूरा करने उनकी जरुरत नहीं है और उसे पूरा करने की योग्यता हम दोनों में मौजूद है!

इस प्रकार दो सालों की हरकत को मैंने अपने पिताजी से कह डाली तो मेरे वृद्ध पिताजी, जो कि छः बेटियों के बाप थे तनिक खामोश रह गये! किसी ख्याल में डूब गये...फिर एक दिन अचानक बाहर से आकर बाबा ने मुझे कहा, 'बिटिया, वरुण तो इनकार करता है कि तेरी इलजाम सच नहीं है!'

क्या अपराधी आसान से अपना कसूर कबूल करेगा?

इकलौता बेटा, वरुण के पिताजी ने भी दहेज कम तेरी शादी के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया!?

ना बाबा, मैं उस लफंगे को प्यार नहीं कर सकती!

तो उस कमीने के हमलों को तूने कैसे बरदास्त किया था.

आपका सही अनुमान है पिताजी मुझे भी मालूम थी कि आप भला तो जग भला! फिर हम निम्न मध्य वित्त घराने के होते हुए भी हमारी इज्जत-आबरु कम नहीं है......! हम छः छः बेटियाा होते हुए भी बदनामी-नौबत नहीं आई है! इसी के कारण हमारी शिक्षा, दीक्षा, आत्माभिमान तथा परंपरा पर नाज़ है जो कि हमें चौकस करा देते है! विवेक के इशारे पर हम अडिग चलती थी! मैं तो आखरी औलाद थी जिसने अपनी प्रतिरक्षा की जानकारी परिवार के पुरुखों से हासिल की थी. फिर बेजा शोरगुल और तुम्हारे दिमाग में फिकर न बढ़ाने का तो मेरा फर्ज था ही! मेरे बाबा ने मेरी अंदरुनी-यकीन से फिदा होकर पहले की तरह फर्ज निभाने मुझे सलाह दी थी!

लेकिन वक्त की फेर जो इतनी टेढ़ी है, अलग अलग सूर से इन्सान को छेड़ती है, आज तो साबित हो ही गयी! मेरा बेवक्त आ गया! मेरे प्यारे पिताजी चल बसे, मेरे यकीन मुझे सुपुर्द करके, तब से ही वरुण की साजिश बहुजन केंद्रित हो गयी! उसके धन खुशामद की लालच को मैंने भी ठुकरा दिया. वरुण गुस्सा खाने लगा..!

हर दिन की तरह एक दिन सबेरे मैं तालाब से लौट रही थी मुहल्ले की औरतों के साथ....! एकाएक पेड़ की ओट से निकल कर किसी ने मेरी राह पर खड़ा हो गया! दूसरी औरतें चौंक कर अपनी बाट पकड़ लीं! कुटिल हांसी के साथ वरुण करीब आकर चापलूसी करने लगा! उसके साथ उसका एक किराएदार पहलवान भी था! अपनी हालत महसूस करने से पहले मुझे नजदीक एक झोपड़ी को उठा लिए थे! मेरे भींगे कपड़ो को खींचने लगे! नंगी बदन पर जबरदस्ती के पहले मेरी बुलंद आवाज से दोनों चौंक उठे.

सुनो वरुण! जबरन मत चाहिए! इस काम के लिए चाहिए दोनों पक्षों की रजामंदी! और इसी सिलसिले में अंतराय मेरा सलज्ज मन इसीलिए मुझे चंद क्षणों की मुहल्लत चाहिए! आजादी चाहिए! अपनी सराग प्रस्तुति चाहिए! डर, शर्म, लोक-लाज आदि अड़चनों को हटाना चाहिए! इन बात चीतों के दरम्यान मैंने अपनी करतूर भी दिखवा दी! उस वक्त वरुण की चीख तथा खून से लथ पथ शरीर, मेरा रंक्त रंजित मुंह और पहलवान बबूड़ा का गायब हो जाना-आप जैसे हमारे गांव के महानुभव लोग तो देखते रहे हैं! ऐसी हालत में एक बेसहारा-लड़की कैसे पार उतर सकती? अगर राक्षस के प्रतिरोध को मानवीय उपायों से दूर नहीं किया जा सकता, तो दूसरे एक राक्षसी तत्व से मुकाबला करना क्या हर्ज है..?

सृष्टि रक्षा के लिए आसुरिक शक्ति को विनाश करते देवता भी अपने खून पसीने से दूसरे असुर को पैदा किया करते थे तथा कथित असुर को निधन करके सृष्टि के संतुलन की रखवाली करते थे! मैंने भी ऐसी एक भूमिका निभाई है! वरुण भी आसुरिक शक्ति हीन हो गया है! हिजड़ा बन गया है....हां...हां....हां! मैं भी कहूं कि जो उसे समर्थन देगा वह भी उस गुट का होगा....!

आप पूछ रहे हैं कि इस घटना के बाद मेरे सुनहरे सपने टूट गए होंगे ..? मैं तो कहूंगी कि बिलकुल नहीं! और हिजड़ो के माफिक सुनहरे सपनों से एक पौरुष की जख्मी-जंग तो बेहतर है! वरना इस दुनिया ना मर्दो का अखाड़ा बन जाएगी! कयामत की ओर धस जाएगी!

इतने में सुनाई पड़ रही थी पुलिस गाड़ी की साईरन..!

आशीर्वाणी

औलाद ही मां की पहचान है! औरत..की कामयाबी है. तो नाजायज औलाद क्या मातृत्व की स्वीकृति के लिए आवाज बुलंद कर सकती है? स्त्री-जीवन की परिपूर्णता ला सकती है? लावारिस औलाद की होने वाली मां को चाटुवचन से अतृप्त मर्द साथी अक्षय पिघल उठ रहा था. क्षणिक उत्तेजना के जादु स्पर्श से! अवहेलिता नारी भावना के सुदूर तरंग वलय के बीच केन्द्र बिंदु-आंदोलित मन बहुविध निक्षिप्त हो रहा था, स्थिर संचित स्वच्छ जल पूर्ण अनुचिंता के तालाब में! मांसल बाहों की बंधनी में लवणाक्त क्लेद रुचि का आघ्राण ले रहा था मर्द-साथी! प्यार के ज्वार के किसी एक निभृत बलय तंतु के भीतर से किसी एक क्षीणकाय बच्चे की तुतुलाती आवाज मानो तैरती आ रही थी...अक्षय सुन रहा था!

अयी जननी! बलिहारी तुम्हारी सृष्टि वैचित्र्य...! कमजोर प्रवृत्ति का सहनीय प्रकाश... मैं बदनसीब तुम्हारा कुक्षिगत हो रहा हूँ! तुम्हारे ओछेपन का संग्रह बनके तुम्हारा ही लौह शेल बनूं यह मेरी आदत का प्रतिकूल है! प्रत्येक सृष्टि का हित चिंतक है! फिर भी तुम्हारा नेपथ्य शत्रु होऊँ यह मेरा असह्य भविष्य होगा.

निशब्द भाषा का सुदूर पैगाम को समझ रहा था अक्षय लेकिन कामना विभोरा महबूबा उर्वशी अक्षम थी बोध गम्यता की चोटियों पर आरोहण करने! प्रमत्त कामना के ज्वार स्नाता रमणी तुलना कर रही थी चरम सीमा पर सृष्टि की बहुविध अनुभूर्तियों को......!

+++++++++++++++++

संतान...सृष्टि...कितना पवित्र...कितना निरापद आश्रयदाता..! क्षमाशील व्यक्तित्व..! कमजोर दिमाग वाले बेसहारे दंपति का सुदृढ़ आश्रय स्थल! फिर भी वे अपने स्वार्थ का दस्तखत कामना करते हैं, यद्यपि अगले भविष्य में संतानों से अवहेलित क्यों न हो! अब भी अक्षय सुन रहा है विमोहिता रमणी की कुक्षि कंदुक से किसी एक बच्चे का सतर्क संकेतः

हे तुम अनजान स्वीकृति दाता, होशियार, नारीत्व की अवमानना के लिए किसी एक पलातक स्रष्टा के ऊपर तुम इन्तजाम लाद नहीं सकोगे, जो कि व्युहच्युत हो ही गया है. उसके बदले तुम ही व्युह केन्द्र हो! मैं सब कुछ सहन कर सकूं. मगर मातृत्व का अपमान नहीं... अतः आपके सहनीय बाहु-फांस ही मेरी मां की निरापत्ता है.

चौंक उठा था अक्षय कैसे गोंद-डांड़ में उलझ गयी थी उसकी मासुमीयत! उसकी जिस्म की भूख को कोस रहा था, जो कि अक्टोपास की मसृण बाहों से छुटकारा पा नहीं सकती थी!

+++++++++++++++

क्षमा..! क्षमा ही वही ऐशी-आशीर्वाद है, जिससे दुनिया के हर पाप, अधर्म साफ हों जाते हैं, निर्मलता शांति के रुपांतर बनकर! हे अतृप्ति के प्रतीक मेरे अभिभावक! तुम शांत हो! कह रही थी अदृश्य सृष्टि इन्द्रधनुष की रंगीन छटा से एक दूसरे को प्रलोभित मत करो! छल, कपट तज दो! सही बरताब से मुझे अपनाने की कोशिश करो! प्रवृत्ति का लगाम दो! करवट बदलाओ! देखो तुम्हारी सृष्टि आज दुनिया को संवारने बुला रही है! आ रही है कमजोरियों को समार्जन करने.. आइन्दा तुम्हारी भोग लिप्सा संयत हो..! नये मेहमान की चर्चा के लिए अब से ही लग जाओ...!

लेकिन लिप्सा तो हमारी अनंत अक्षय...! जिस्म की आग तो बुझते नहीं बुझती! संसार के अमीर, गरीब, तंदुरुस्त, मरीज सबके सब इसी आग में झूलस जाते हैं! हां, अवश्य रोटी, कपड़ा और मकान जिनके पास जितने कम और नहीं के बराबर है, उनके पास तो इस आग की लपटें भी उतनी कम हो सकती हैं. इसी आग के मारे तो इन्सान की महत्वाकांक्षा राख ही राख बन जाती है! हाय री दुनिया तू मुझे इस मरघट की ओर इतनी जल्दी क्यों ले जा रही है? सोच की भंवर में गिर गयी उर्वशी, लेकिन जिस्म की पुकार तो अंगड़ाई ले रही थी!

+++++++++++++++++

इतनें में कुक्षिगत संतान की आवाज सुनाई पड़ीः 'अरी माँ, मेरी कुर्बानी

अपना लो! क्यों कि प्यारे लोगों की ख्वाहिशों को पूरा करने मिट्टी के पुतलों का फर्ज है. इसी तरह तुम भी मेरे अभिमान को अंधियारे में खोजने का मौका दो! कबूल कर लो मेरी ममता को! मुझे अलविदा कह दो.... तुम बेकसुर हो जाओ! ताकि तुम फिर एक घरौंदा बना सकोगी नए सिरे से जिंदगी शुरु करोगी, जिस से वारिश का मुहर भी हो....नए चिड़ियों का पैगाम भी हो...! भविष्य की सुनहरी उषा भी हो....!

+++++++++

अवचेतन मन में चेतना की बिजली कौंध उठी! उर्वशी तय कर ली कि लावारिस की सड़न को कैसे रोका जा सके? तामसिक प्रवृत्ति की जठर ज्वाला को कैसे साफ कर दिया जाए...? अस्वीकृत मातृत्व ही नारी जीवन की असार्थकता है. इसे कैसे हम मिटा सकें...?

+++++++++

उर्वशी और अक्षय दोनों की कोशिशें कामयाब हुई. दोनों मिल जुलकर फिर एक 'शैशव-सेवा-सदन' बनवाने की योजना कार्यान्वित करने लगे, जिसके लिए किसी एक अदृश्य फरिस्ता की ही 'आशीर्वाणी' प्रेरणा जुटाई थीः

'माँ! तुम्हारे सब तक दोष मुझे ही सौंप दो.. तुम समाज की इलजाम से छुटकारा पा जाओ! अपराध मुक्त हो! स्वच्छ शुभ्र हो! दुनिया में सब प्रकार संदेह से दूर हो जाओ! आंसू की फसल से दूसरों को समृद्ध करो!

'ना बापू ना.....! मुझे तेरी ही जरुरत है! इसी मिट्टी और कीचड़ के ज्वार से मुझे रिहा मिले, मुझे माफ कर दो प्रभु! रो रही थी उर्वशी! म्रियमाण अक्षय तसल्ली दे रहा था. दोनों, बच्चे की आवाज ही महसूस करते थेः

'तुम स्वच्छ शुभ्र हो...! अपने आंसू की फसल से दूसरों को समृद्ध करो....! दिव्यता की आशीर्वाणी महसूस करो....!'

मरघट की मिट्टी

अनिषा के मुंह से नरेश उसकी अपनी ही बातें सुन रहा थाः प्यार और ममता की कसम खाकर दासता की सुनहरी जंजीर में इन्सान अपना जिंदा स्वार्थ को पोषण करता है! मुहब्बत का पिरामीड वहीं सुहावना लगता है, जहां जिंदगी की मौलिक जरुरतें अभाव नहीं हो! रोटी, कपड़ा और मकान के अभाव में हमें जैसे महसूस होता है कि प्यार के प्रकांड द्रुम के नीचे चट्टान की एक सतह आ गई है! मानो, उस बढ़ते पेड़ की मुकुलित चेतना को कब्र खाने में कैद करना ही उसका मकसद है! उसे न पाने की हकीकत आज इस देश में कम नहीं दिखाई पड़ती है! मौत से भी बढ़कर यह दर्दनाक है! क्योंकि मौत की उम्र तो सिर्फ पल दो पलों में होती है पर अभाव का दर्द इन्सान की अन्दरुनी हालत में हमेशा लगा रहता है. न पाने का हाहाकार उसे झकझोर देता है. फिर भी कोशिशों का अंजाम क्या है, इसे आदमी ढूंढते रह जाता है!

अनिषा सोच रही थी दर असल कितनी सुंदर थी उसकी कमसीन उम्र! लेकिन बाढ़ जैसे किनारे की हरियाली फसल लूट लेती है, वैसे भी उसकी बढ़ती उम्र अपने ख्वाबों को साफ कर दी थी! उन बातों को दोहराने से उससें ही उमड़ आती हैं अपने माथे के सूने आसमान पर!

कमसीन उम्र...! वह थी अनिषा की...! रेशमी कांटों से उगते हुए रोंगटे द्वारा भरी हुई क्वारी देह में उसकी सैकड़ों चाह की कलियों से लदी हुई अनगिनत कल्पनाएं...! मगर वह न थी एक जादुगरनी, छल-कपट की प्रतिमा! वह थी एक साधारण नारी, इन्सानियत थी

जिसके अनमोल आभूषण! लेकिन यह क्या हुआ, यह एकाएक विपर्यय हुआ किसलिए....? अपने लिए या दुनिया के किसी एक ख्वाब भरे रामधनुष के आखरी नतीजे के लिए, कह रही थी अनिषाः

कौन, किसलिए कब भी औरों के लिए बिना किसी उम्मीद रखके वक्त नहीं गंवाता है! शायद अपनी मंजिल तक पहुंचने या दूसरों की निगाहों में अपने आप को बुलंद साबित करने कमजोर ताकत के पास ताकतवर की मदद फैल जाती है! शायद यह उसकी पुंजि हो सकती है, मदद के बदले मौका ढूंढ कर अपनी चाहत की मांग पूरा की जाती है!

यह मनुष्य-मनस्तत्व खोद रही थी अनिषा...बीस वरस का ऋतु चक्र जैसे सिल सिला रहित उपन्यास के अलग अलग अध्यायों की तरह उसे महसूस हुआ था!

अनिषा....बांप मां की प्यारी, दुलारी आखरी औलाद...उसके ऊपर तीन बहनें और एक भाई, उसे ऐसा लगता है मानों, उनके गुरु भार से आज उसके दिल और दिमाग की रीढ़ टेढ़ी हो गयी है!

आज फिर क्या ले कर वह जीएगी अपनी जिंदगी की बची हुई वसन्त बहार के साथ दुश्मनी करके? काश बच जाती कमसीन कुतूहलों की आंख मिचौली खेल के इशारों से....!

++++++++

कभी कभी अपने मामा के घर जयंत आ रहा था दूर के रिस्ते के बहाने में, अपनी वासनाओं को तृप्त करने! अनिषा की याद है उस दूर रिस्ते वाले जयंत के लिए वह भी भीग जाती थी शर्म से, क्यों कि उसकी तितली सी मूंछ पर उलझ जाती थी, अनगिनत चाहत की टेढ़ी निगाहें!

कभी कभी तन्हाई में इस आंख सेंकने की तस्वीर को याद करके मुस्कुराने के बगैरह वह रह नहीं सकती थी! इतनी हिम्मत जैसे एक लड़की के नजदीक डरपोक बन जाती! सचमुच उसके सामने ऐसे कांपते हुए शक्ल देखने से अनिषा शिहर उठती है!

'अनी...!'

'ऊँ....!'

'अनि' उर्फ अनिषा को जैसे लगा कि जयंत कांपता गला भर आया था! पर दूसरे ही पल में पागल की तरह अनिषा की बाहों को पसीने भींगी हथेलियों से जोर पकड़ कर कंपरोगी की भांति उस डरपोक मुछियल जयंत ने कहा था 'मैं तुझे शादी करुंगा अनी!... तेरे बगैर..!'

खैर, रहने दो... बोलते अनिषा सजोर हंस उठी और उसके मुंह पर हथेली ढांपकर बोली, जो वादा करते हैं, वे बिल्कुल निभा नहीं सकते!'

सचमुच आज अनी की बात जरा सा झूठ नहीं साबित हुई है. उसकी निगाहों की मिट्टी में न जाने कितने इन्सान जानवर की तरह लूढक गए हैं! कफन में चैन ले रहे हैं! तब भी उस पहाड़ी बंजर मिट्टी किसी से इनकार नहीं कर सकी! अवश्य चुपचाप आंसू बहायी है! रुखे सूखे, बचे खुचे पुआल में आग लगाई है. धुएं भी निकले हैं. अनुकूल हवा में उफान भी ली! अपनी ठण्डक भी सेंकी है! आंच के नजदीक उसकी भीगी मिट्टी की बदबू तप गयी है! आखरी उसकी रुखी सूखी मिट्टी चांगली बन गयी! जलाते जलाते इन विगलित, कुत्सित मुर्दो को हजम भी कर गयी है जैसी रुह... वैसी फरिस्ता भी बन गयी है. आज मरघट की मिट्टी कंकड़ कठिन नहीं निकली! बदल गयी! चर्बी चढ़ गयी, अनुभव के उपजाऊ से!

आज वह सच्चाई पर निगाहें डालती हैः कच्ची उम्र की हीन स्वाद अनुभूति ही इन्सानी सफर की लगातार डगमगाहट है! लेकिन अनुभूत जीवन के कुतूहल तो कितने मीठे खिंचाव हैं...! जिंदगी की पहली बहार जो हौले हौले दिल के भीतर नर्म शैर करती है, क्या इन्सान को वह उतावला नहीं करती है.? आज अनी सोच रही है, आदमी के लिए क्यों इतनी जंजीरे होती हैं? इतने बाधा निषेध क्यों..? क्या लगाम हीन आचरण को जब्द करने? क्या बेंढंगी जानवरपन को इन्सानियत की राह पर लाने? हां, धीरज और अनुशासन लगाम हो सके तो जवानी भी आनाकानी नहीं कर सकती! मगर उसमें ढोंग का डर भी हो सकता है!

क्योंकि चोर अगर अपनी कमजोरी एलान कर दे तो हमलों से क्या वह बच सकेगा?

नहीं...! फिर औरत और मर्द कैसे बेशक जिंदगी निभा सकें...?

नरेश भी अनी की बातों पर गौर से सोच रहा है.

इसीलिए जरुरत है दिल दरियाव इन्सानियत् कैदी रुह को जिस्म से छुटकारा दिलाने से जो चेहरे पर पाक सिद रोशनी निकलेगी, वह कितना नैसर्गिक है, नए सिरे से जीवन की सार्थकता खिल सकती है, जिसके लिए भाषा भी इस दुनिया में नहीं के बराबर ही है!

++++++++

क्या तुम मुझे छुटकारा दिला सकोगे नरेश...!

चौंक उठा नरेश! बाहें फैला कर हम सफर अनी को गोद में भर लिया. अनी के गर्म आंसुओं से नरेश की छाती भीग रही थी. वह आंसू पोंछ रहा था. आंसू भीगी आंखों की गहराई में नरेश भी अच्छी तरह देख रहा था 'मरघट की मिट्टी' पर तन्हाई में एक परिपुष्ट श्मशान तुलसी मानो, शांति का ढांढस दिलाने अपना ही माथा हिला रही है!

+++++++

ज्वाला

बिलखते हुए चिड़ियों का बसेरा खिसक गया पेड़ की टहनी से. निहार रहा था मानस उन चिड़ियों को, जो हर समय अपने छोटे से घर को सजाने और संवारने लगे रहते थे. मानस के घर के सामने वाले कटहल पेड़ पर उसका था नैसर्गिक संसार! काला कबरा, नर-चिड़िया, गेहुंआ रंग के पंख पसार कर उड़ती मादा चिड़िया 'सफेद नर्मिली' को शायद अपना जीवन साथी चुन लिया था. लेकिन आज यह दुर्घटना क्यों हुई? कटे पंख 'काला कबरा' की चीख और 'सफेद नर्मिली' की खून से लथ पथ चोंच...? उनके पीछे जोरदार कई चिड़ियों का जख्मी पर हमला...!

इसका मतलब क्या है? सनाक्त कर रहा था मानस, अपनी अनुभूति की पुंजि लगा कर!

जरुर यह एक असामाजिकता होगी, जिसमें बेचारे की जख्मी आवाज आज क्षीण होती जा रही है! इसकी जिम्मेदारी वह किस पर थोपेगा, खोज रहा है मानस. प्राणी जन्म लेता है. दुनिया की रोशनी में चकाचौंध हो जाती है उसकी आंखें! पंखे खुल कर आसमान में अपनी चारण भूमि ढूंढ लेता है! इसके बाद महुआ गंध में ख्वाब देखता है! निःसंग ज्वाला में तड़पते हुए किसी के नर्म, गर्म स्पर्श को अपना लेता है! इस अपनाने की जोश में कही भूल चूक तो रह नहीं जाती...? इस अपनाने का भाव ही स्वयं सिद्ध भूल तो नहीं...? इस के चलते ही प्राणी की हर भूल की शुरुआत हो जाती है. उसके अंतर के निस्तरंग सरोवर में खोज की लहर हलचल मचा देती है! इस प्रकार ज्वार अगर नहीं आता, तो ऊर्जा भी उसे मिल नहीं सकती! जीवन का दूसरा नाम तो ऊर्जा है ही न...? इस ताकत के बगैरह प्राणी तो गूंगा हो जाता है सवाल जवाब चल रहा था मानस के मन में.

घर चिड़ियों के घर की आड़ में मानस के मन में आज पैदा हुई है प्रश्नवाची की लहरें! काला कबरा की मर्दानगी और सफेद नर्मिली की.

तिर्या-चाल तथा इस तस्वीर के फ्रेम की तरह चिड़िया, गुट का शासन और नतीजें में नायक, नर-चिड़िया का खून से लथपथ पौरुष...! प्रचलित जीवन प्रवाह का यह एक नमूना है. पारंपरिक विचार परिप्रेक्षी में जिसका वर्तमान रक्ताक्त संग्रामशील, छिन्न पक्ष विहंग का भविष्य क्या उड़ते सपनों में बेकार न होगा? अंकुरित पंख वाले पंछी का आत्म विश्वास क्या निथर देह के बदले बाजी नहीं लगाता अनंत आकाश के सानिध्य के लिए....? जंग-ए-जिंदगी के ताज पहनने के लिए...? मानस ताकता रहा है चिड़ियों की चीख के साथ क्रम निथर शरीर की हलचल और आखियों के पुतुलों में जलती निगाह को...! बिहंग के दृग पुतुलों के गोल दर्पण में मानस अपनी परछाई भी देखता रहा है! मेल खाती रही है मनुष्य की जीवन धारा के साथ! पंछी और इन्सान...! पंख और मन....! खास कर एक दिलदार मन कोमल हृदय की नर्म गर्म मीठी अनुभूति की आंख मिचौनी, खिन भिन रुई की तरह...!

++++++++++++++++++++++

दूर....सुदूर की पहाड़ी उत्श्वास की भाँति टेढ़ी मेढ़ी नदियां...! किनारे पर विचरण करने वाले जानवरों के भीमकान्त स्वरुप....! सुदूर चोटियों की मुण्डरी भूमि पर चलते बादलों की मालाओं की आड़ में फसल स्रष्टा भील दंपत्तियों के संगीत की पुकार खींच लाई थी मानस को, ऊँचे आसमान के सूनापन को फाड़कर, चिड़िए की पंख लेकर....! समय समुंदर की जहाजी यात्रा से आकर इस पहाड़ी इलाके में मानस ने नौकरी पायी है! इन्सानियत की अच्छाई और नेक आदत का परिचय यहां उसे मिला है गंवारु पहाड़ी आदमियों के बीच, जहां हंसी मजाक के बीच जीवन की कठिनता घुल जाती है! रोए-दिल सभ्य मुंह की अविश्वास कालिमा यहां नहीं के बराबर ही है! लावारिस इन्सान की सेवा के लिए यहां नहीं है पिछड़ापन! यहां सब कर्मठ हैं. दूसरों की गलतियां पकड़ने यहां किस की दिलचस्पी नहीं. इनके पास वक्त नहीं है दूसरों के जिक्र करने या भाषा कूट के इंद्रजाल सृजने...!

उन्हें मालूम है कि 'पेट एक है और हाथ दो.' यानी एक भूखे पेट को सम्भालने खुदा ने दो तंदुरुस्त हाथ दिए हैं. खाने का थैला एक है, अनाज उगाने के तरीके दो हैं! फिर एक हाथ की अनाज से अपने पेट भरके दूसरे हाथ की शेष अनाज से दूसरों के पेट भरा जा सकता है जिनके न है हाथ, न पैर, न इस अजीबो गरीब दुनिया में कोई भी रिश्तेदार! इसीलिए ये सब कहते हैं, आओ रे भाई, दो गुनी फसल उगाएं इन राक्षसों की भांति खड़े हुए पहाड़ों के ऊपर. उसे जब्द करेंगे हम सब एक होकर, हल लांगल से फाड़ कर उनकी उबड़ खाबड़ कंकिरिली मिट्टी की चमडियों को! उनके पेट फाड़ कर आओ बटोरेंगे हमारी उगली हुई फसलों को.....मकई.... बाजरा.... मडुआ...अलसी.....सरसों....पहाड़ी धान ....और कई प्रकार की अनाज...! और श्याम को ताजा सलप रस[1] पीकर नाचेंगे थोड़े बहुत 'ढेम्सा'[2] और बजेगी महुरी फिर ढोलकी...! वाह, जीवन में थकान कहां रे बाबू...? जो थक बैठता है, नींद उसे निगल जाती है! इसीलिए ही गांधी महात्मा ने कहा था कि 'आराम हराम है!' जीवन में जात पांत कुछ भी नहीं रे बाबू! हम जानते हैं कि आदमी सिर्फ दो किस्म के होते हैं. एक मर्द, दूसरी औरत. अरे बाबू, इस दुनिया बसाने के लिए ये दोनों एक होकर एक बसेरा बनाते हैं. औरत की मदद से मर्द इस दुनिया को कई मेहमानों को घर क्यों बुलाता, मालुम तुझे? इसीलिए बुलाता है कि फसल उगाने उन्हें मदद करने!

मानस इस आदिवासी तत्व को जान कर उन्हें प्यार करते आया है. एक दिन उस आदिवासी मुखिया-बूढ़ा ने उसे कहा था, 'अगर तू हमें प्यार करता है तो एक बात और याद रखना! घर संसार में मर्द और औरत दोनों की बराबरी रहनी चाहिए! वरना घर बसाना नामुमकीन हो जाएगा! एक दूसरे के खुल्लम खुल्ला भाव को मर्यादा देना होगा. वरना जिद्दी से घर अवश्य टूट जाएगा! और मर्द अपनी दृढ़ता रखना चाहिए, औरत

1-एक पेड़ के रस से प्रस्तुत शराब

2-औरतों-मर्दों की श्रृंखला में नाच

अपनी कोमलता...! अरे बाबू, याद रख कि हर बात के पहले उसकी सलाह मत लेना! पहले एकांत में बैठ कर उस विषय के भला बुरा सोचो. उसके बाद जो कुछ. अगर उसके इशारे पर 'उठ बैठ' होगे तो तुम्हारे मर्दाने जीवन में सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा! इसीलिए ही लोग कहते हैं कि, 'तिरला' यानी, तीर की ज्वाला रे बेटा! उसके विपरीत भी यह हो सकता है कि दुनिया के जितने आवर्जनीय तत्वों को 'औरत की ताकत' फूंक सकती है! आग सुलग सकती है-मैली, अनचाही बातों पर और उसके बदले में दे सकती है मर्दों की सुदृढ़ हथेली पर निर्मल, शुद्ध, आग्नेय सृष्टि! यहां सभ्यता का नवीकरण हो जाता है. अतः पुरुष और स्त्री के बीच एक सामाजिक शर्तनामा चाहिए कि आपस में बराबरी हिस्सा निभाना होगा, जिनमें एक तरफदारी का नामों निशान नहीं रहेगा और कामयाबी हासिल करने अपने अपने फर्ज को कुर्बानी की वेदी पर अदा करना होगा!

अभिभूत हो गया था मानस, सुन कर ये मीलों की बयान. तब अपनी जिंदगी में मानस ने क्या इन तत्वों को रुपायन कर पाया था?

++++++++++

पौरुष के सीमित अंग प्रत्यंगों में एकाएक जब आ जाती है उम्र की बेसुमार ज्वार तब उदवृत्त उत्तेजना असंभाल हो जाती है! डगमगाती है आदमी की स्थिति! बाढ़ के उद्वृत्त पानी में भयभीत मांझी की हालत की भांति आदमी का इल्म भी नाकाम हो जाता है. इस सिलसिले में मांझी को चाहिए कि अपने नाव को वह कैसे किनारे की ओर घुमाए, अपनी डोंगी चलाने की माहिरी लगा कर, लेकिन उस अनुभूति को बहाव में दुरुपयोग करने बुद्धि हीनता ही साबित हो जाती है! नतीजा सिर्फ मौत के अलावा और क्या हो सकता है? उसे तो कुर्बानी नहीं कही जा सकती!

परंतु बाढ़ में बह गयी थी मानस की जीवन-तरी! 'काला कबरा' पंछी भी उत्तेजना कबूल करके ढूंढ लिया था 'सफेद-नार्मिली' साथी! आपस में बांट लिए थे चंद अनुभूति को जिसलिए अधुरी भूख ही रह गयी थी एक अपरिपक्व मादा चिड़िये का संग पाकर! मानस भी घर बसाया था 'प्रिया'

को लेकर. पर प्रिया ने सफेद नर्मिली की तरह अपने मन मुताबिक जायकेदार अन्न व्यंजन, वस्त्राभरण का वादा हासिल करने उसे बेचैन कर दिया था. काला कबरा तथा मानस के तिल तंडुलित मन दोनों अपांक्तेय रह गए. फिर भी पौरुष के अजेय मन संग्राम से विरत नहीं हुए, हालांकि अनुभूति बंटवारे के वक्त के हिस्से में बेचैनी ही तय हुई थी! इस झंझट को निपटाने के बहाने जुट गए स्वार्थ पर, कलह प्रिय तथा कथित परिजन वर्ग. मर्दानी–औरत प्रवृत्ति के शोले भड़काने में मदद करने लगे मर्द के नर्म दिल पर चोंच भोंकने लगे! सफेद नर्मिली और प्रिया चुंबन की ढोंग से चूसने लगे अपने मर्द के गर्म खून, खून से लथ पथ मर्दानगी...!

परिजनों की साजिश से टूटे पंख काला कबरा आज महसूस करने लगा कि नर्म दिल में जो चुभन हुई उसमें उसका कोई भी कसूर नहीं है. उड़ान के साधन पंख आज बहुधा विदीर्ण हो गए हैं! फिर भी आंख के पूतुलों में आज स्थिर अग्नि शिखा..! अलबत्ता वह धरती से उठेगा...उड़ेगा वह.. तैरेगा जरुर वह असमान के अन्तहीन फैलाव में...! मानस भी आज छिन्न बाहु होकर नहीं रहेगा. सोते के बिछड़े पल्वल के भीतर वह क्षीण धारा खो जाएगी नहीं...! दूषित भी नहीं होगी...! लो, कितने पास है वह अनन्त स्रोत... अविच्छेध्य धारा....अशुष्क प्रवाह.!

काला कबरा सरक रहा है उसकी ओर! क्रम निथर देह उसकी रेंग रही है..! मानस भी महसूस करता है कि उसके दिलों दिमाग का बोझ हलका होता जा रहा है! काला कबरा भी सोते में गिर जाने की आवाज देता है. थकान समेत खून पसीने बह जाते हैं! जड़ता पिघल जाती है! मानस ने भी अनुभव किया, 'आज दरअसल मैं भी उबार जाता हूं इस दूषित कीचड़ पानी के घेराव से...! और जो उबार नहीं सकता, इस संसार की ज्वाला में, वही सिर्फ तरसता रह जाता है!'

वनवासी

'बस्तीपुट', मेरे सपनों की चारण भूमि! गगन चुंबी लहरित पहाड़ों के तले कल कल नादिनी 'कुलहाड़ी' पहाड़ी नदी के किनारे आम, कटहल, खजुर, अमरुद आदि का आकर्षण! नजदीक पहाड़ी टीलों के ऊपर पिरि–घास से बनी हुई झोपड़ियों की कतार मानो कुदरत की मुसीबतों के भीतर इन्सान की अंदरुनी अस्मिता को साबित करती आ रही है! भिन्न भिन्न संप्रदायों का शांतिपूर्ण सहावस्थान यह बड़ा एक देहाती गांव पहाड़ी इलाके का एक कस्बे के नजदीक है. मन में शांति का प्रलोप लगा कर कार्यक्षेत्र में उस दिन योग दिया था. फिर भी सर्पिल रास्ते की उतार चढ़ाव घाटी संकट खतरनाक महसूस हुआ. मलेरिया प्रपीड़ित एक वनवासी गांव में रहने प्रवासियों का नासिका कुंचन इस प्रकृति प्राण कर्मचारी को असर डाल नहीं सका. मनोभाव प्रकाश के बाद प्रत्येक पड़ाव में वासिंदे मुझे प्यार से अपना लिए थे. गांव में रहने का चटापट बंदोबस्त हो गया था. उनका कलुष लेश व्यवहार अमृत, मधुर, स्वर्गीय भुलाए नहीं भूलता है! आपस में आदमी जब एकाकार हो जाते हैं तो उनके अभिमान का पहाड़ चकनाचूर हो जाता है. उनके अंदर की छिपी हुई धाराएं भी एक प्रवाह में बहने लगती हैं! आह इससे कितनी शीतलता मिलती हैं जिससे हम अपने पाप, ताप सब कुछ गंवा सकते हैं. खैर, मुझे तो एक गरीबन विधवा बूढ़ी की कुटिया भी मिल गयी चंद रुपयों के भाड़े में. सपरिवार वहां बस गया.

++++++++++++++++

गांव वालों का साथ हमारा रिस्ता तो शुरु होने लगा मधुर देशीय गीतों के जरिए! क्योंकि हम आपसों की भाषाओं से अनजान थे. फिर भी अनजान गीतों की स्वर लहर मधुरतर ही लगती है. जब उनका मशहूर 'पुष पुनि'[1] छेर छेरानी पर्व आ गया, तब नोना नोनियों का झुंड मदमाते झूमते गाने लग गए हमारे घर के सामने :

1–पौष पूर्णिमा में छेरछेरानी 'यानी' 'स्वेच्छा कृत अर्पण' त्योहार मनाया जाता है!

छैर छेरानी दिओ तो
कुटा धरा रह तो![2]
छानि ऊपर तुण्ड़ीं,
मेरी माइझी मुण्ड़ी![3]
छानि ऊपर कुम्हड़ा,
मेरी माइझी ढूम्डा![4]

'अरे भाई, मुझे तो जरा समझा दो ना. ये सब क्या गा रहे है!'

अजी, हमारी कई अनजान बातों को अच्छी तरह सुनने के बाद आप ही खूद समझ जाएंगे. जैसे छेर छेरानी का अर्थ इस मशहूरर त्योहार के लिए जी खोल कर कुछ दीजिए न! कुटाई पिषाई आदि आपके हर दिनों के गृह कर्म को कुछ समय थाम लीजिए!

आपके छाद के ऊपर जो *तुंडरी फल है, मेरी मुंडरी औरत के लिए उन सबको तोड़कर मुझे दीजिए! फौरन आपके छाद के इस कुम्हड़ा दे डालिए! क्योंकि मेरी नंगी औरत मुझे ढूंढने लगी है!

वाह, कैसे मीठे दिल के अरमानें! परायों को अपनाने कैसी मधुर खुशबू..!

घर वाली मां कहने लगी बाबू! तेरे लिए गांव वाले एक झोपड़ी खड़ा कर देंगे! लेकिन सात साल तक मेरे परदेशी बेटे को यहां से ना छोड़ सकी ना मैं छोड़ सकूं! नाती नातिनों से मैं तेरी सहरी भाषा सीख लूं...!

अच्छा सीखलो माँ! खैर, कहतो, तुम्हारी उम्र कितनी है....?

होगी कोई, चार बीस आसपास

अस्सी! मेरी अच्छी आदि माता, कह तो देखूं तुम्हारे यहां के लोग सब अच्छे लगते हैं ना....?

सब तो नेक थे यहां मगर, कई घाटी पार कोर्निया *[1]साहुकार यहां आकर सब कुछ निगल दिए! यह भी कह नही सकूं कि कई लोग भी यहां खूँखार और तांतर[+] नहीं हैं....!

ज्यादातर तो भोले हैं, उनके साथ वे अच्छा तालुक नहीं रख सकते?

'कुत्ते की पूंछ- हमेशा टेढ़ी, सीधी नहीं!'

सिरफ झुन झुन[+] होकर चक्कर मारते हैं. पर धाबू

*'दूध उकुरिले
उटि जाइसीबे,
मनिष उकुरिले
फुटि जाइसिबे!

इन्दा[1]...ले....तेरा लांदा-खांदा देखो, मैं आती हूं, इतने में नजदीक से एक सार लहर उमड़ पड़ी :

'आई थी जब तुम
नहीं थे घर,
कपाट बंद था
तुम्हारे द्वार...!!
और, कैसे पाऊँ मैं
[3] खंजा हो,
साक नहीं मेरा बैंगन नहीं
मांगने की चीज
नहीं हो......!'

और एक जन कह रहा थाः [4]हादे बाबू, वह गिबड़ रहा है! लेकिन हमारे यह नोना को समझाया नहीं जा सकता. क्यों किः

^ 'अबुझ को बुझाई नहीं
नुन के पुड़गाई नहें!'

अब नोना कहने लगाः

'मेरा है तो
चुगते चुगते

2-दिल खोल कर दीजिए, कुटाई पिशाई रुकिए! 3- छाद के ऊपर तुंडरी, मेरी औरत मुंडरी ४- छाद पर कुम्हड़ा, मेरी नंगी औरत ने मुझे ढूंढा! * लता से जात खाने का एक फल *[1] कपटी + तांत्रिक *[2]मस्त, *[3]दूध ज्यादा उबलने से/आग में,/आदमी ज्यादा उत्पात से/मरघट में..!

खा जाओ,
तेरा आँचल
पकड़ूं तो
कोढ़ी मुझे कहो!'

वाह, कैसा है सुन्दर दृश्यः कैसा झूठा मान-अभिमान! दो सरल तरल हृदयों के मिलन के लिए कैसा यह अदम्य उद्यमः

अरी बालू-फूल,[१] तो के कितने बार घर बसाने तागिद किया है, लेकिन तू तो पेंड़म[२] खा कर सिर्फ हिड़ते[३] रहे हो....!

तुम तो लाड़ बिसर जाते हो, नोना!!

वह नोना-नोनी-जोड़ी को मैं पास बुलाया. आपस में दोनों को मिलवा दिया. चाय के दो प्याले पकड़वा दिया वाह, कैसी खुशियां उनकी फूली न समायी! नोनी बोलीः

चाटा पुनि मंनी ओष बाबू![४]

++++++++

मैंने उससे पूछाः अरी, तुझे तेरा नोना ऐसे क्यों छेड़ता रहा है...?
रीझला नूनी का मन है बाबू,
[५]रीझला नूना का धन....!
फिर नूनी अपना प्रियतम नोना से कहने लगी
[६] 'घुंघरा मुहाँ
[७] खेजा देने से ही [८]बात उड़ालूँ
[६] उबका बिसासे
न देऊँ छुआँ!'[१०]

++++++++

नूना बोलाः
'बालू फूल, बालू फूल,

१-ले, २-खान पान,, ३-खबर ४-हंस
^'ना-समझ को/समझाया नहीं जा सकता,/नमक को भी/जलाया नहीं जा सकता!

बन गयी तू गू-माल...
डोक्री बन के जब आओगी
घर में खिलेगा
पदुम फूल....!
बालू फूल....बालू फूल....!
हंसते हंसते बेंदम हो गया,

मां भी. घर से मेरी पत्नी बोल रही थीः इन लोगों के मन में कुछ भी खोटा नहीं है ना चिंता ना फिकर..सिर्फ गीत और फूल...! वाह, इनकी भूख और प्यास कुछ भी नहीं क्या.....? सिर्फ दिल दरियाव कारोबार.. .! मैंने कहा, हां प्रिये, देखो तो मन में कैसा अनाविल प्रेम, छुट पुट झूठा गुस्सा, गुमान...! मौज मजलीस...छेड़ छाड़.....!

इतने में संध्या के आरक्त आकाश के तले गांव के चौक, बरगद के नीचे से आ रही थी ढोल महुरी रंजित ढेम्सा[१] ध्वनि धिताम्....तां...... धितामं...तां...! और गांव के आबाल वृद्ध वनिताओं का वृंदगान और मिश्रित स्वर लहर मानो जैसे जीवन जख्म को भूलते हुए दूसरों को अपनाने पुकार रहे हैंः आ .....आ....रे.....आ.....!

1—तुझको, 2—एक प्रकार का देशीय शराब 3—घूमते, 4—चाय तो मोहिनी—दवा है, 5—रीझ गयी, 6—इतना छोटा, 7—चीज के बदल में चीज, 8—उगालूं, 9—मुफ्त, 10—पास न आऊँ **पद टीकाः** बालू फूल बालू यात्रा में चुनी गयी औरत साथी, गंध—गू—माल——बदबू दार बेला, प्रसारिजी लता जो कि सेहत के लिए उपकारी है डोक्री—स्त्री, पदुम—पद्म

1—औरत-मर्दो के युगल नृत्य की ध्वनि

विश्व वतन

जब अनुभव सिद्ध पुरुखों की कोई नहीं मानता और विधि निषेधों को उलट फेर करके उपहास तथा उलंघन करता है तो कयामत ही आ जाती है. ऐसे लोगों के सरदार तो पलभर दुनिया में कोहराम मचा देता है. ससागरा धरा को अपने अख्तियार में ले लेता है. निर्मम जुल्म के सहारे इन्सानियत कुचल कर आँसू और खून में तरोवतर करके अपने मैले झण्डें को भी रंगीन कर लेता है. आदमी, औरत, पशु पक्षी, कीट पतंग, वृक्ष लता, पहाड़, पर्वत, नदी, झरना तथा मिट्टी के अस्तित्व को ध्वंस करने वह पैशाचिक आनंद भी अनुभव कर लेता है. इसीलिए कहावत है कि 'बांस, न हो उत्पात, आधा बनो उपकरण और आधा हो जाओ राख!' फिर भी दुष्ट दुर्मदों के मुखिया की हुकूमत के कई बंदे उन्हें चापलूसी कर रहे थे उनके कौमी संगीत गाकर-

।।उपद्रवी स्थान।।

उपद्रवी स्थान, घमण्डी जरा जीन!
मासूमों के लिए विवादित आस्थान
उड़ता अजगर सर ताज निशान
बेशर्म, खून का अवमूल्यायन
पियारा सहारा वज्र वाण
निर्देशक शुक्राचार्य प्राचीन
कमजोर प्राणियों का करता भोजन

कटु व्यवहार मगरमच्छ क्रन्दन
उड़ाता हिंस्रिक रक्त केतन
अहितकारी हो सबका दुश्मन
मारन तारन सब जनते आपन
उपद्रवी स्थान, घमण्डी जरा जीन।।०।।

साबाशी दिलाकर वचस्करों को मुखिया सलाह देते हैं कि प्यार और दिल की धड़कन ही इन्सान को कमजोर कर देता है! इसीलिए एकाएक दूसरों पर वार करना ही मर्दानगी है. जब चाहे तुम थोड़ा बहुत हलचल पैदा करना ही सीखो हमसे और 'दिग़ विजयी भव' इस अलीक संसार में कुछ भी हुड़दंग करके हल्ला मचा दो, दुश्मनों को हमारे पैर के तले कुचल डालो. तब ही एकाधिपत्य शासन में अशान्त वातावरण खुद व खुद शान्त हो जाएगा. इस तथ्य पर हम अब्बल क्षत्रीय बन जाएंगे. बाकी लोग दान्त में तिनका पकड़ कर दासानुदास बन कर अनु शासित हो जाएंगे. लेकिन जो कोई इनकिलाबी नारा लगाएगा उसे जहन्नुम में हम तुरंत भेज देंगे ताकि तुम्हारा कोई भी क्रांति की लड़ाई के लिए हिम्मत नहीं जुटा पाएगा. शाम, दाम, दण्ड, भेद से साजिश करके पूरी दुनिया को कब्जा कर लो. जो कतार पर हाजिर नहीं होगा उसे दुनिया से अलविदा कर दो. यह है हमारी वीरता क्योंकि हम जन्मजात लड़ाकू है. अचानक आक्रमण करके नाकामयाबी से पहले भी प्रस्थान कर लेते हैं. जालिमों का जालिम है हम डर के मारे हमें सब करते हैं सलाम! ए मेरे बुलन्द स्थान के ताकतवर सिपाहियों, हमारे जितने दुश्मन हैं उन्हें एकाएक हमला करना तुम्हारा फर्ज है. हमारा मुख्य प्रतिद्वंदी है वह शाश्वत देश, जहां सारे इन्सान बेझिझक सत्य, न्याय, शान्ति श्रृंखला में रह कर निरापद जीवन यापन करते हैं. हमें यह खटकता है कि उसे सारी दुनिया मानती है कि वह प्राकृतिक जीवन का सर्व व्यापक संरक्षक है. आनंद अमृत का दाता है. अशांति उपद्रव होगा क्योंकि नेकनामी के बदले बदनामी ही खूंखार आदमी को सफल उद्योगी बना देती हैं.

संसार में उसका बोलबाला ही उसे प्रगतिशील बना देता. दूसरे लोग भी हमारे चाटुकार, किंकर बन जाएंगे. हमें ज्यादातर खुशियां और शोहरत मिलेगी. हम धन्य हो जाएंगे. अधिक कुछ इतिहास बनाते रहेंगे. हमारे आगे ज्ञान विज्ञान की शीतलता के बदले निर्मम कठोरता ही चाहिए ताकि हम नया विश्व बना सकेंगे.

पृथ्वी के सब परिचालना संस्थानों पर हमारा प्रभाव जारी है. यौन विलोम कर्मियों की आपूर्ति, आर्थिक रिस्वत खोरी, मुफ्त नशीली और शस्ती पदार्थो का वितरण, गुण्डे, असामाजिक शख्सों को हम कब्जे में ले आए हैं. महामारी भूताणु विस्फोरण करके सुदृढ़ लोकमत राष्ट्रों की बरबादी हो जाएगी. तब ही हमारा राज कायम हो सकेगा. हमारा वाणिज्य, व्यापार की प्रभुता व्याप्त हो जाएगी. हम दूसरे कमजोर देशों के अन्दर घूस कर मददगार हो जाएंगे. कम लागत से ज्यादा मुनाफा की कमाई होगी. साजिश षड़यत्र रच कर आपसी झगड़ा लगा देंगे. दोनों मुल्कों के लिए भी मारणास्त्र बेचने के सुव्यवस्था कर सकेंगे. अन्तर्देशीय होड़ से ही सब कुछ गड़बड़ हो जाता है. गुटबाजी, एक देशदर्शी भावना संसार में संतुलन घटा देती है. सामरिक पारदर्शिता हासिल करने और दूसरों को धूलि चटाने की प्रतियोगिता लग जाती है.

अचानक कोविड़-19 भूताणु विस्फोरण हो जाता है. लाख करोड़ आदमी संक्रमित हो जाते हैं. मृताहत आदमियों की लाश पर कैसा व्यापार और राजनीति हो रही है? सबसे पहले हमारा जीवन धारण और रक्षण की सुव्यवस्था होनी चाहिए. उसके बाद यारी या दुश्मनी संभव हो सकेगगी. वरना सब कुछ मरघट ही बन जाएगा. यह कतई मंगलमय नहीं हो सकेगा. पहले जीवन, जीवन बचाने भूख और प्यास मिटाने के लिए कर्ममय उत्पादनशील व्यवस्था होनी चाहिए. इस व्यापक महामारी को रोकने के लिए फौरन हमें चाहिए बीमारी प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने की टीका का उद्भावन! औषध, इंजेक्सन, स्वास्थ्यप्रद वातावरण निर्माण पर जोर देना चाहिए. अब क्रोध, असूया व्यवहार नहीं रखना चाहिए! सबकी

भलाई से ही हमारी भलाई है. इस अनित्य संसार में शाश्वत चिंताधारा पर हमें चलना चाहिए. सर्वोपरि इन्सानियत को ध्वंस करने वाला उस प्रतिपत्तिशाली उपद्रवी राष्ट्र अपने ही बहु जन गण के स्वाधीन सार्वभौम स्वप्न को चकनाचूर करके एक छत्राधिपतित्व कायम रखना चाहता है. अपने ही लोगों और अपनी सीमा सरहद से सटे हुए स्वतंत्र पड़ोशी देशों पर अकथनीय अत्याचार, अनाचार करके खलबली मचाने के मकसद में पैशाचिक सफलता पाना अपनाा लक्ष्य बना लिया है. पृथ्वी के दूसरों को कीड़े मकोड़े समझता है. उनके खून पसीना चूसना ही उसकी वीरता समझता है. इस प्रकार की वृथा नामर्दगी को ठीक कर देने उसके असंतुष्ट अत्याचारित प्रजाओं के इनकिलाबी नाराओं को जिन्दाबाद न देखने और कुचल देने उसकी कुचिंतित योजनाएं अब भी चल रही है. लेकिन ये सब अशुभ लक्षण उसे एक दिन बुरा नतीजा ही देकर रहेंगे. सारे जहान की सुव्यवस्था अतिशीघ्र उसे सही रास्ते पर चलने जरुर मजबूर कर देंगे. एक न एक ही दिन उसकी घमण्डी शरारत अलबत्ता शांत हो जाएगी. जनतंत्र की विजय होगी. दुनिया में शांति और स्थिरता राज करेगी. हमारे समूचे विश्व वतन सही भाईचारे में खिल उठेंगे! विश्व के विभिन्न राष्ट्र मिलजुल कर एक नया पृथ्वी पंचायत गठन करेंगे. किसी भी सदस्य के हाथ विशेषाधिकार यानी 'विटो पावर' नहीं रहेगा.

तीन चतुर्थांश या अधिकांश सदस्य वृंद के तत्कालीन निर्णय लेकर पहले आत्म रक्षा के उपाय चिंतन करेंगे और फौरन समस्त प्राणियों की सुरक्षा करेंगे. मारात्मक भूताणु करोना के प्रति सतर्कता अवलंबन कराएंगे. इसीलिए बुद्धि जीवी जन 'गण माध्यम' से प्रचारित, प्रसारित कर भी रहे हैं:-

शीर्षक : ना, करोना, ना....!

ना करोना, ना; नाक रोना, ना....!
भूताणु जीवाणु बीमारी प्रसारण ना,
हिंस्र आचरण ना, जा करोना, फिर न आना!

चम गादड़, गिद्ध जीवाणु छोड़ो ना....
अमानवीयता पर पाबंदी लगओना।।

पृथ्वी पंचायत में कोहराम मच गया था कि यह कैसा अदृश्य जीवाण वाण एकाएक निक्षिप्त हुआ है? पहले रोग संक्रमण पर पाबंदी लगाओ. आपसी दोषारोप बन्द करो. महासभा में सृजनशील वैज्ञानिकों की सलाह है कि कहीं भी बहुत लोग एकत्रित न हो, सामाजिक दूरता रखो. दारु, दवे की फौरन प्रबन्ध करो. श्वास प्रक्रिया शुद्ध जीवाणु रहित मास्क यानी साफ कपड़ा-आच्छादन से नाक, मुख आवृत्त रखो. साबून से बार बार हाथ धोते रहो. शाकाहार भोजन की व्यवस्था करो. मांसाहार तज दो. हमेशा साफ सुथरा रहो. यह जीवन का मंत्र है. सारे विश्व स्तरीय लोग नए सिरे से पृथ्वी को फिर एक बार सही सलामत जींदा रखो. बेकार की आर्थिक, राजनीतिक होड़ मत लगाओ! यह हमारा शाश्वत स्थान, इन्सानों का वतन, त्याग पपूत जमीन, पावन सृजन, रोग, शोक, संताप शोधन, अनन्त प्रेम, अमृत धाम, न्याय धर्म चक्र बुमेरां निर्माण, प्रकृति संरक्षण, नित्य संयम, घट घट निवासी ब्रह्म; भक्ति, ज्ञान कर्म धारण, यही जीव का भव तारण, एक अनेक उद्धारण. यह हमारा शाश्वत स्थान, विश्व वतन.

देवदूत

यह एक दुष्ट देश की चाल है कि भूताणु संक्रमण के जरिए हमें ध्वंस कर दिया जाए. अतः बीमारों की घूस पैठ के लिए कोशिश जारी है. देश को सही सलामत रखने के लिए सुरक्षा बल और स्वास्थ्य कर्मियों की जी जान लगाकर तत्परता वृद्धि हुई है. खलनायकों की चाल को नाकाम करने सचेतन नागरिकों के मुखिया हर कदम लोगों की हिफाजत करने रात दिन एक कर दिए हैं. अमान्यकारियों को जब्त करने की चेतावनी दी जाती है. फिर भी साजिश के तहत उन आदमियों की सोची समझी भूल चूक अब भी जारी है. आखिर उन्हें पकड़ कर संगरोधी आवास पर लाया जाता है. चिकित्सा की सुव्यवस्था हो रही है. लेकिन विध्वंस की ताकत हर मुमकिन अच्छाई पर पानी फेर देती है.

हजार लाख आदमियों पर ये कहर लाद कर शैतानी की बेईमानी हमें झकझोर देती है. संग रोधी कैद खाने में इलाज के वक्त वे देवदूत डाक्टर, धायों पर थूक रहे हैं. शाकाहार और पथ्य लेने को भी वे लोग इन्कार कर रहे हैं. मांसाहार, स्वादिष्ट भोजन के लिए उत्पात मचाकर मांग की जाती है. गुप्त शत्रुओं की उकसावे में ऐसे षडयंत्र हो रहा है. महामानविक समुन्दर में कयामत लाने की कोशिशों को रोकने विज्ञ जन बहुत सदुद्यम कर रहे हैं. रोग जीवाणु संक्रमण को बन्द करने रोग प्रतिषेधक टीका उद्भावन में वैज्ञानिक प्रतिभाएं तत्पर है. फिर भी इन्सानियत लाचार हो गयी है कि कैसे हम सुरक्षित रह सकते हैं?

दुष्टों की शरारत के बीच कई अपवाद भी दिखाई पड़ते है. भूताणु संक्रमित लोग इलाज के बाद जब संक्रमण रहित हो जाते हैं तो चिकित्सा विज्ञान उनके प्रदत्त खून से दूसरे रोगिंयो के लिए अमृत संजीवनी साबित

हो जाती है. शैतानों के चंगुलों से छुटकारा पाकर वे भी एकाएक देवदूत हो जाते हैं. इस प्रक्रिया को एण्टी बॉडी प्लाज्मा थिरापी पद्धति कही जाती है.

वे सब देवदूत अपने आपको निछावर कर दिए हैं. सफल चिकित्सक होकर अपने ही खून के अवदान से दूसरों को सेहतमंद भी कर रहे हैं. वही सच्चे इन्सानों के प्रति हमारा विनीत प्रणाम है, ताकि वे सदैव अमर रहेंगे.